आप अमीर बनना चाहते हैं ?

के. के. सिन्हा

ॐ श्री गणेशाय नमः

No part of this publication can be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author and the publisher.

Published by

K K SINHA FOUNDATION

New Bhakatpur, Silchar, Cachar,

Assam, India, Pin 788121

Email: kksinhaofficial@gmail.com

First Edition – December 2018

Price

Rs. 150.00 (Rs.One Hundred Sixty Only)

© Copyright, 2018, K K Sinha

आप अमीर बनना चाहते है?

पहला संकलन

के के सिन्हा

अनुक्रमणिका

1. अमीरी क्या है?
    a. अच्छा स्वास्थ
    b. बहुत सारा पैसा
    c. अच्छा भबिष्य
    d. अच्छा समय
2. अमीर बनने का रास्ता
3. बिस्वास
4. सकारात्मक स्वभाव
5. आकर्षण
6. प्यार
7. कर्म
8. कृतज्ञता
9. दान
10. कुछ ज्यादा करने की क्षमता
11. जो चाहो वो पाओ
12. इगल बने
13. भगवान् मुझे बचाएगा

कृतज्ञता

यह किताब लिखने से पहले में शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ अपनी प्यारी माँ इंदुमुखी सिन्हा, पूजनीय स्वर्गीय पिताजी कीर्ति सिन्हा और मेरे चार बड़े भाई और भाबिया और दीदी जो मुझे हमेशा सफल देखने के लिए प्रोत्साहित करते रहते है। शुक्रिया अदा करता हूँ अपनी पत्नी रतना सिन्हा का जो हमेशा सुख दुःख मे साथ देती रही। संसार मैं बहुत सारी कठिनाइयां होने के बाद भी वो हसी-ख़ुशी मेरे साथ रही और भगवान के कृपा से एक सुन्दर सा बेटा भी मिला। शुक्रिया अदा करता हूँ अपने सास और शसुर के परिवार को भी जिनकी वजह से एक अच्छी और समझदार पत्नी मिली और जो हमेशा मेरे और मेरे परिवार के लिए दुआ करते रहते है। उन सबका सुक्रिया अदा करना चाहता हूँ, जिन्होंने मुझे आगे बढ़ने में मदत की है। मैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ सुखदेव सिन्हा का जो हमेशा मुझे सही राह दिखाते है। मैं कृतज्ञ हूँ अपने संस्था "युवा jजागृती" के सभी साथियों का जो हमेशा हर काम में एक झूट होकर आगे आते है और मेरी कमियाबी के लिए दुआ करते रहते है। शुक्रिया अदा करता हूँ श्री बिनिन्द्र सिन्हा का जो हमेशा मुझे सही सलाह और प्रोत्साहन देते है। अपने सभी मित्रो का भी शुक्रिया अदा करता हूँ की वो हमेशा मेरा साथ कठिन समय रहते है और भगवान की कृपा से मुझे बहुत अच्छे दोस्त मिले। अपने समाज के सभी लोगो को भी में शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जो हमेशा मुझे प्यार और आदर देते रहे और में उन सबका भी कृतज्ञ हूँ जिसने जाने और अनजाने में मरे और मेरे परिवार और मेरे संस्था "युवा jजागृती" की सहायता की है। में शुक्रिया अदा करता हूँ अपने पड़ोसियों का जो हमेशा मेरे ख़राब समय पर मदत के लिए आते है। और में शुक्रिया करता हूँ अपने बेटे, भतीजे और भतीजियो को भी, जिनके भाबिस्य को उज्वल करने के खातिर में आगे बढ़ता रहता हूँ। और अपने समाज के उन सभी गरीब और बेरोजगारों को भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिनके लिए में कुछ अच्छा करना चाहता हूँ और संघर्ष करता रहता हूँ और आगे बढ़ता रहता हूँ। सुक्रिया अदा करता हु उन सब छात्रों का जो मुझसे कुछ सिखने के लिए आते है और मैं उनको कुछ अच्छा दे पता हु। सुक्रिया अदा करता हु उन सब लोगो का जो मेरे Youtube Channel से कुछ अच्छा सीखते है, जिन लोगो को में सिखा पता हु और आगे बढ़ते रहते है।

हे! परमेश्वर आपका भी कोटि कोटि धन्यबाद आपने इज्जत से भरा एक जीवन दिया, हाथ, पैर, दिमाग, आखें, बुद्धि, ज्ञान और सभी अंग सही सलामत दिया और लोगो की भलाई करने के लिए आपने मुझे चुना आपका कोटि कोटि धन्याबाद................।

जाने और अनजाने में मैंने अगर किसीको दुःख पहुँचाया हो या मेरे कारण किसी की क्षति हुई हो तो मैं आज उस परम पिता परमेश्वर को साक्षी मानकर उन सबसे माफ़ी

मांगता हूँ। हो सके तो वो मुझे माफ़ करदे। इस किताब में अगर कोई शब्द गलत हुआ है तो कृपया ठीक करके पढ़ लीजियहगा और हो सके तो मुझे माफ़ कर दीजियेगा।

यह किताब आपके पास है इसका मतलब आप सचमे अमीर बनना चाहते है। आप कैसे अमीर बनना चाहते है यह आप-पर निर्भर करता है। इस किताब मैं, में आपको उस रहस्य के बारे में बताऊंगा जिसे जानकर बहुत सारे लोग अमीर बन चुके है। कभी कभी आप यह सोचते होंगे की क्यों धरती के कुछ लोग ही अमीर बन जाते है और बाकी लोग साधारण जीवन बीताते है। यह कोई चमत्कार नहीं है। यह एक रहस्य है जो भगवान ने स्वयं हमें दान के रूप में दिया है। ज्यादातर लोग उसको पहचान नहीं पाए थे। यह किताब आपको अमीरी की राह पर ले जायेगी। अमीर बनना आपका अधिकार हैं। क्यों इस अधिकार से बंचित रहेंगे। बिल गेट्स बोलते है " **अगर आप गरीब पैदा हुए है तो यह आपकी गलती नहीं है, लेकिन अगर आप गरीब होके मरते हो तो यह आपकी गलती है** "।

क्या आपके माथे पर कही लिखा हुआ है की आप गरीब होंगे? क्या शारीर पर किसी जगह पर कोई धब्बा है गरीबी का? नहीं ना! तो क्यों सोचते हो गरीब हूँ? बस आपको थोड़ा सा ध्यान रखना पड़ेगा की भगवान ने आपको क्या गुण दिया है। जिसको इस्तमाल करके आप अमीर बन पाएंगे। बस आपको खुदपर यह विश्वास करना पड़ेगा की आप अमीर बनेंगे। एक दिन ऐसा आयागा की आप भी अमीर बनेंगे। आप भी बहुत सारी दौलत के मालिक बनेंगे। आप भी सफल ब्यक्ति बनेंगे। आपके पास धन, दौलत, स्वास्थ्य, संपत्ति और सुख होगा। परिवर्तन जरुर होगा, क्युकि परिवर्तन ही सफलता है, और सफलता ही परिवर्तन है।

अमीरी क्या है?

इस किताब में जो बोलने जा रहा हूँ वो आपको सिर्फ पढ़ना नहीं है, आपने जीवन में भी उसे काम पर लगाना है। इस किताब में जो बाते बताई गई है वो ध्यान से पढ़िएगा और जो भी अच्छा लगे उसे एक डायरी (Diary) पर लिख लीजियहगा और रोज एक-एक बार उसे देख लिजीयहगा। किताब को एक दिन में ही पढ़के ख़तम नहीं करना है। रोज एक-एक अध्याय पढ़िएगा। जब यह पढ़के ख़तम हो जायेगा तो दुबारा उसे एक बार और पढना

है। इससे इस किताब की सारी बाते आपके दिमाग पर बैठ जाएगी और आप आसानी से आगे बढ़ पाएंगे।

दूसरी बात.. हो सके तो इस किताब को तीन महीने बाद एक बार और पढ़ लेना है, जिससे और भी गहरी तरीके से आपके दिमाग पर बैठ जाएगी। क्युकी संसार के इस झमेले में सब भूल जाते है। तीन महीने बाद एकबार दुबारा पढ़ने से आपको दुबारा सब कुछ याद आ जायेगा।

साधारण लोग अमीर बोलते ही समझ लेते है की जिसके पास बहुत _ ज्यादा पैसा हो, जिसके पास बहुत ज्यादा संपत्ति हो, जिसके पास गाड़ी हो जिसके पास बैंक में बहुत सारा पैसा हो जिसके पास पॉवर हो वो अमीर है।

क्या असल में यह सच है?

आप क्या सोचते है? जिसके पास बहुत सारा पैसा है, बहुत सारी संपत्ति, बहुत सारी गाड़ीया, आलिशान घर है फिर भी वो खुश नहीं है तो आप उसको क्या कहेंगे? बहुत सारे लोगो के पास पैसा तो है लेकिन उसको खर्च करने वाले कोई नहीं है, उसको क्या कहेंगे? संपत्ति बहुत सारी है लेकिन खाने वाला कोई नहीं है, उसको क्या कहेंगे? पैसा बहुत है लेकिन हमेशा बीमार रहता हैं, उसको क्या कहेंगे? पैसा है लेकिन किसीको दान नहीं करना चाहता है, उसको क्या कहेंगे? लोगो के पास सबकुछ तो है लेकिन वो किसी न किसी वजह से नाखुश है उसकी अमीरी का क्या फ़ायदा? अभी आप सोच रहे होंगे की पैसा बुरा होता है? मैंने ऐसा बिलकुल नहीं कहा है।

तो इसका मतलब क्या है?

मैं ऐसा मानता हू की असल में वही सच्चा अमीर है जिसके पास यह चार चीज़ है -

1. **अच्छा स्वास्थ्य** **२.अच्छा पैसा**
3. **अच्छा भविष्य** **४.अच्छा समय**

आइयह इन सब के बारे में विस्तार से समझते है :-

१.अच्छा स्वास्थ्य (Good Health): - जिसके पास बहुत सारा पैसा हो लेकिन अच्छा स्वास्थ्य नहीं है और हमेशा वो बीमार रहता है असल में वो अमीर नहीं है। उस पैसे का वो क्या करेगा जो खर्च करने के लिए वो खुद ही ठीक तरह से रह नहीं पाता।

अच्छा स्वास्थ्य मतलब क्या है? आपको याद है? बचपन में आप किताबो में पड़ते थे "स्वास्थ्य ही सम्पद है" (Health is Wealth) एक बार फिर से याद कीजिये उस बात को। इतना सुन्दर वाक्य जानकर भी हम भूल जाते है की स्वास्थ्य ही असल में असल

सम्पत्ति होती है। यह जानते हुए भी हम अपने स्वास्थ्य को ठीक तरह से नहीं रख रहे है? हमेशा खराब और विशेले चीजो को खाते है। तम्बाकू, घुटका, बीडी, सिगरेट, अफीम, गंजा, शराब और ड्रग्स आदि अपने स्वास्थ्य को नष्ट कर रही है। क्या यह सही नहीं है? और मजे की बात यह है की कब हमें याद होता है? जब हम हस्पताल के बिस्तर पर पड़े हुए होते है। तब हमे यह याद आ जाता है की हमने खुदको और अपने स्वास्थ्य को ख़राब किया है और रो पड़ते है। आज के ज़माने में हम जो भी चीज़े खाते है वो सभी विषेली चीजो से बना हुआ होता है। जो लोग तम्बाकू, घुटका, बीड़ी, सिगरेट, अफ़ीम, गांजा, शराब और ड्रग्स नहीं लेते वो भी बीमार पड़ जाते है। तो आप और हम क्या चीज़ है? अभी आप समझ सकते है की हम कहा है?

किसीने सच ही कहा है “**इन्सान भी क्या अजीव चीज़ है जिन्दगी भर पैसा कमाने के लिए अपने स्वास्थ्य को खो देता है, और फिर उस स्वास्थ्य को दुबारा पाने के लिए अपनी जिन्दगी भर की कमाई खो देता है, जीता ऐसे है की कभी मरेगा नहीं और मरता ऐसे है जैसे कभी वो जिया ही नहीं**”।

रमेश और राहुल दो दोस्त है। घर की परिस्थिति ठीक नहीं होने के कारण दोनों ने ही कम उम्र से ही रोजगार करना शुरू किया था। दोनों ही बहुत परिश्रम करके रोजगार करने लगे। रमेश कमाया हुआ पैसा बहुत हिसाब के साथ खर्च करता और अपने भविष्य के लिए जमा करके रखता था। दूसरी तरफ राहुल कमाया हुआ पैसा हिसाब से खर्च करता था और हर महीने बाजार से थोरा बोहुत फल खरीद ले जाता था खाने के लिए। और बाकी के पैसे वो जमा करके रखता था भविष्य के लिए। और यह देखने के बाद रमेश अपने दोस्त पर बहुत गुस्सा हो जाता था और बोलता था “क्यों अपने पैसे को फालतू के चीजो पर नष्ट कर रहे हो”? पेट भरके खाना नहीं खाता क्या? और भी बहुत कुछ...। जानते हो इस साल मैंने 12000.00 रुपयह जमा किया है और तुमने सिर्फ 8000.00 रुपयह जमा किया है। मुझसे भी कम? हम दोनों तो एक ही काम करते है फिर भी तुम्हारे इस फालतू की खर्च की वजह से तुम ठीक से पैसा जमा नहीं कर पा रहे हो। यह कहके राहुल को समझाता है। दोनों में बहुत गहरी दोस्ती है। जब रमेश रहूल को ऐसा बोलता है तब वो रमेश को समझाना चाहता है, लेकिन वो समझने को तैयार नहीं होता और राहुल हसके उस बात को वही पर खत्म कर देता है। और सिर्फ एक बात बोलता है यह जो पैसा में हर महीने खर्च करता हु वह खर्च नहीं है, बिनियोग है। तुम्हे यह बाद में पता चलेगा।

चार साल बाद एक दिन रमेश बीमार पर गया। एक महीने तक वो बिस्तर पर परा रहा। हर रोज राहुल शाम को काम से लौटते वक्त एक बार देखने के लिए उसके घर पर आता। एक दिन राहुल ने रमेश से कहा इस महीने बीमार होने के कारण डॉक्टर और दवाई के ऊपर पूरा 10000.00 रूपया खर्च हुआ है। और इसके साथ इस महीने की कमाई भी

गई। तुम्हारा तो नसीब ही अच्छा है। तब राहुल ने रमेश से कहा तुम्हे पता है एक दिन मैंने तुम्हे कहा था की जो पैसा में फल खाने में खर्च करता हु वह एक बिनियोग है। तब रमेश को समझ आई की राहुल तब क्या कहना चाहता था। तब से रमेश भी अपनी कमाई से थोड़ा पैसा अपने स्वास्थ के लिए भी खर्च करने लगा।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ की सिर्फ फल खाना ही जरुरी है। मैं तो यह कहना चाह रहा हु की फल हमारे स्वास्थ के लिए बहुत जरुरी है। और इसके साथ हरे-भरे और रंग-बिरंगे सब्जिया, अंडा, मछली, मांस और बहुत सारा पाणी पीना आवश्यक है। लेकिन दुःख की बात यह है की आज कल बाजार में जो सब्जी और फल मिलते है वह असल में इतना प्राकृतिक नहीं होता। ज्यादातर रसायन और कीटनाशक पदार्थ से बनाई जा रही है। जो हमारे पेट में जाकर अनेको बीमारिया पैदा कर रही है। और इसलिए हमें थोड़ा सावधान होना जरुरी है। कीटनाशक और रसायन पदार्थो को ना बोलना चाहिए। हर घर प्राकृतिक चीजो से भर देना चाहिए। चाहिए जैविक खाद के ऊपर ध्यान देना। बाजार में आजकल बहुत सारे लोग प्राकृतिक खाद बेच रहे है, उसे उपयोग में लाना जरुरी हैं। और इसके साथ हमें अपने सरकार को भी रसायन और कीटनाशक को इस्तमाल न करने के लिए आवेदन करना होगा। भारत में अरुणाचल प्रदेश में जैविक खाद के ऊपर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। अगर वह राज्य कर सकता है तो पूरा भारत क्यों नहीं कर सकता? इसके लिए हमें एक जुट होकोर लड़ना होगा। यह अगर अब नहीं करेंगे तो आने वाले जो पीढ़ी होगी उन सबका सर्वनाश निश्चित है। हमारा और हमारे आनेवाले पीढ़ी का भविष्य सिर्फ एक फेसले पर निर्भर करता है। आपलोगों को शायद पता नही होगा की पंजाब में सिर्फ कैंसर मरीजो के लिए अलग से एक रेल गाड़ी दिया है भारत सरकार ने। जिसको कहते हैं “कैंसर ट्रेन”। वहा सबसे ज्यादा कीटनाशक का इस्तमाल होता है। यह बोहुत दुखद है।

अगर हमें अमीर बनना है तो सबसे पहले हमें स्वस्थ रहना होगा। और स्वस्थ रहना ही हमारा पहला अधिकार है। और हमें अपने इस अधिकार को पाने के लिए लड़ना होगा। क्या आप तैयार है? एकदिन हम ज़रूर जीतेंगे। हम जरुर अमीर बनेंगे। क्योंकि स्वास्थ्य ही इन्सान का असल संपत्ति होता है।

एकदिन एक पत्रिका पढ़ रहा था। वहा एक डॉक्टर ने एक पंक्ति लिखा था “Prevention is Better than Cure” तब उस बात का मतलब ठीक तरह से पता नहीं था। वो पंक्ति मैंने पूरा पढ़ ढाला। वहा पर इतनी अच्छी तरह से उस बात का मतलब समझाया था की मैं अचंभित रह गया। बताया गया था की बीमारी आने से पहले उसको पहले से ही रोक देना अच्छा होता है। उसीको ही बोलते हैं “Prevention is Better than Cure” मुझे बहुत अच्छा लगा वो पंक्ति पढ़के। आगे बताया की अगर कोई भी व्यक्ति बीमार होने के बाद उसको ठीक करने के लिए बहुत सारा पैसा खर्च कर सकता है, तो फिर वह

व्यक्ति उस बीमारी को रोकने के लिए हर महीने थोड़ा थोड़ा खर्च क्यों नहीं कर सकता? सोचिये अगर एक आदमी बीमार होने के बाद लाखो रूपया हस्पताल और दवाइयों पर खर्च कर सकता है, तो फिर वह हर महीने थोड़ा-थोड़ा अपने ऊपर खर्च करके अपने स्वास्थ को ठीक रख सकता है। है की नहीं?

हमारा शारीर एक मशीन के तरह ही होता है। जैसे हम अपनी मोटर साइकिल और कार छ: महीने बाद बाद सर्विसिंग करते रहते है। ठीक उसी तरह हमें भी अपने शरीर रूपी मशीन को हर साल एक बार सर्विसिंग करना परता है। हमें अलग से प्रोटीन और विटामिन लेना आवश्यक है। क्योंकी हम जो खाना खा रहे है वह इतना जहर से भरा होता है की हमारे शरीर पर पर्याप्त मात्रा में वह सब नहीं पहुंच पता। प्रोटीन, विटामिन और मिनरल्स की कमी से ही हम बीमार परते है। शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए हम बीमार परते रहते है। नियमित अगर हम अपने आहार में विटामिन, प्रोटीन और मिनरल लेते है तो हमारे शरीर पर रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ जाती है। और हम स्वस्थ रहते है। हम ज्यादा काम कर सकते है। ज्यादा पैसा भी कमा सकते हैं। और अमीर बन सकते है।

"निरंतर प्रयास करने से सफलता आती है"

२. <u>बहुत सारा पैसा</u> (<u>Enough Money) :-</u> क्या आप नहीं चाहते? की आपके पास बहुत सारा पैसा हो। और उस पैसो से आप अपनी सारी पसंद के चीज़ खरीद सके। क्या आप अपने परिवार के साथ विदेश घूमना पसंद नहीं करते? क्या आप नहीं चाहते की आपके पास भी सुन्दर सा घर और एक सुन्दर सी गाड़ी हो? क्या आप नहीं चाहते की अपने परिवार के बीमार लोगो को अच्छे से अच्छे हस्पताल में इलाज करवाना? क्या आप नहीं चाहते अपने रिश्तेदारों को आर्थिक सहायता करना? यह सब आप चाहते है। तो फिर बीच बीच में यह क्यों सोचते है, की ज्यादा पैसा होना अच्छी बात नहीं है? क्यों यह सोचते है की ज्यादा पैसो के पीछे भागना अच्छी बात नही है? जरा सोचिये ऊपर बताई गयी जो-जो चीजे है क्या यह ख़राब है? अगर नहीं तो क्या यह सब चीज़े बिना पैसो के पुरे हो जायेंगे? नहीं! बिलकुल नहीं। पैसा कभी ख़राब नहीं होता बस लोगो की नियत ख़राब होती है। पैसा हमेशा अच्छा ही करता है। अगर पैसा किसी गलत आदमी के पास पहुच जाये तो ही ख़राब होता है। आपकी नियत अगर अच्छी है तो फिर आप ऐसा क्यों सोचते है की पैसा ख़राब होता है? जो आदमी पैसा मिलते ही घमंड में डूबकर गलत काम करता है, समझ लेना की उसको ज्ञान का अभाव है।

कुछ लोग ऐसे भी होते है की पैसा थोडा बढ़ जाए या फिर तनख्वा थोरा ज्यादा हो जाए तो घर खरीदेंगे, गाड़ी खरीदेंगे अच्छी अच्छी सामान खरीदेंगे लेकिन लोगो को कमजोर नज़र से देखेंगे। लेकिन याद रखिये जब कोई ऐसा करने लगता है तभी से वह आदमी गरीब होने लग जाता है। वह आदमी धन से अमीर बन सकता है लेकिन मन से नहीं। तब वह भगवान से मांगना शुरू कर देगा की हे प्रभु मुझे एसे ही खुश रखना। भगवान तो अंतर्यामी है वो सब समझते है। उस व्यक्ति को वही देगा उससे ज्यादा नहीं देगा क्युकि वो समाज का कल्याण नहीं कर सकता। याद राखियह भगवान से हम जो मांगते है वही दे देते है। बस उसमें एक अंतर होना चाहिए। खुद के स्वार्थ के लिए अगर हम मांगते है तो बस थोडा सा ही मिलेगा। लेकिन समाज की भलाई के लिए मांगेंगे तो हमें बहुत सारा मिलेगा। जिस धन को आप संभाल भी नहीं पाएंगे।

यह सृष्टी भगवान ने बनाई है। प्रकृति, पशु, पक्षी और इंसान मे से अगर हम किसी का भी तिरस्कार करते है तो भगवान दुखी हो जाते है। और कृपा करना कम कर देते है। कुछ लोग यह भी सोचते है की हम भगवान की ज्यादा पूजा अर्चना करते है तो भगवान मुझे क्यों अमीर नहीं बनाता? सिर्फ पूजा और अर्चना करने से भगवान खुश नहीं होते। उनके बनायह हुए सृष्टी, पशु, पक्षी और मनुष्य को प्यार करने से भगवान खुश होते है। और यही काम पृथ्वी के कुछ ही लोग करते है और वही लोग अमीर बन जाते है। और वही लोग सुखी होते है।

पैसो की कल्पना कीजिये। इसके लिए भगवान से प्रार्थना कीजिये। पैसो को अच्छे कामो पर इस्तमाल करेंगे ऐसा सोचिये। समाज के कल्याण के लिए सोचिये। और एक बात, पैसा सिर्फ प्रार्थना करने से नहीं आती है, इसके साथ काम और परिश्रम भी करना परता है। भगवान् आपको बहुत सारे अवसर प्रदान करेंगे। अभी आपको अवसरो को पहचानना है। याद रखिये भगवान् आपके पास आकर कभी नहीं बोलेंगे की यह अवसर अच्छा है। यह गलत है। यह आप पर निर्भर करता है की अवसर को आप पहचानते है या नहीं? भगवान् पशु और पक्षी को भी खाना देते है उनको कोई पैसो की ज़रूरत नहीं होती, लेकिन उनको भी बाहर निकलकर ढूंढ़ना परता है।

भगवान् ने हमको बहुत अच्छा एक गुण दिया है। वह है चुनने की क्षमता(Choice)। हमको बस यह गुण इस्तमाल करना होगा। और देखना होगा क्या अच्छा है और क्या गलत है। इस चुनने की क्षमता को हमें उपयोग करना है। कुछ लोग अवसरो को देखने के बाद यह सोचते है की यह काम हम नहीं कर सकते है। इस बारे में मुझे कोई ज्ञान नहीं है। ऐसे हालत में आपको किताबो का सहारा लेना चाहिए। याद रखिये लोग अमीर बनते है दो काम करने से। एक है "**किताब पढ़ने से और दूसरा है सफल ब्यक्ति के साथ मिलने से**"। यह दो काम आपको अमीर बना सकती है। अगर आप किताब पढ़ते है तो आपको संसार के सारे चीजों के बारे में ज्ञान हासिल होगा। और आप कोई भी काम कर सकते है। आप जो कर रहे है उसी विषय का किताब खरीद्के पढ़ लीजियह। वह किताब आपको कैसे आगे बड़ते है, उसका ज्ञान देगा। अगर आप कुछ नहीं कर रहे है और कुछ करने की सोच रहे है तो आप सेल्फ हेल्फ, पर्सोनालिटी डेवलपमेंट और मोटिवेशन की किताब खरीद्के पढ़ लीजियह जिससे आपकी चुनने की क्षमता बढ़ जाएगी और आपका दिमाग सही दिशा में सोचने लगेगा।

आपने काफी बार देखा होगा की जब कोई बिजनेस करना चाहता है, या फिर कुछ नया करना चाहता है, तब वह सलाह लेने एक बुजुर्ग के पास जाते है जिसकी समाज में इज्जत और काफी अच्छी पहचान है। तब वह बुजुर्ग सीना तनके बैठकर एक सिगरेट जलाकर बोलेगा.. यह बिजनेस काफी मुस्किल है, मैंने सुना हैं। शयहद यह तुम नहीं कर सकते फिर भी कौशिश कर सकते हो अगर तुम चाहो तो। इसमें तुम्हारा समय बर्बाद हो सकता है? कोई ढंग का नोकरी ढूंढ़ क्यों नहीं लेते? वगेरा वगेरा...। असल में ज्यादातर लोग गलत आदमी से सुझाव लेने चले जाते है। जिससे सुझाव मांगने जा रहा है उसने कभी बिजनेस किया ही नहीं था। उसको बिजनेस के बारे में कोई भी ज्ञान नहीं है। फिर भी सुझाव देने लग जाते है।

हम परीक्षा पास करने के लिए एक अच्छा शिक्षक ढूंढ़ लेते है। जो अच्छी तरह पढ़ाते है। जो उस विषय में ज्ञानी है। नाकि किसी कृषक या दुकानदार से। लेकिन जब

जीवन के लिए फैसला लेने की घरी आ जाती है तब हम क्यों किसी ऐसे ब्यक्ति की सलाह लेते है? जिसको उस बारे में ज्ञान नहीं होता। तब हमारी बुद्धि कहा चली जाती है पता नहीं। सही में यह हमारा दोष नहीं है। यह हमें बचपन में सिखाया जाता है की कोई काम शुरु करने से पहले किसी बुजुर्ग की सलाह ले लेनी चाहिए। जिसने ज्यादा दुनिया देखी है। बचपन की बात का गलत मतलब निकाल लिया लोगो ने। किसी बुजुर्ग की सलाह लेने का मतलब है की उस काम में एक्सपर्ट की सलाह लेना। जो काम आप करना चाहते है। कुछ ऐसे भी लोग देखने को मिलेंगे जिसने अपना अच्छा चल रहा काम छोर दिया किसी ऐसे आदमी के कहने से जो कुछ भी काम करता नहीं है और इधर उधर यूही घूमता रहता है।

नंदन एक गरीब लड़का है। उसकी घरकी हालत ठीक नहीं है। उसका एक और भाई भी था। उसके पिताजी दोनों भाइयो को पड़ा नहीं सकेंगे यह जानकार नंदन ने पढाई छोर दी। और काम करने लग गया। अचानक एक दिन उसकी एक आदमी से मुलाकात हो गई। उसने सुन्दर कपडे, महँगी धरी, एक कार और हाथ में एक हीरे की अंगूठी पहनी हुई थी। नंदन की घर की हालात के बारे में जानने के बाद उस आदमी ने नंदन को एक बिजनेस करने को कहा जो वो खुद करता था और जिस बिजनेस से वो अमीर बना था। नंदन ने अपने पिताजी को कहानी बताई और यह बिजनेस करने की चाह दिखाई। तब नंदन के पिताजी ने उसको बोला की बेटा तू यह काम कर नहीं सकता। तू बिजनेस के लिए नहीं पैदा हुआ है। में तेरे लिए एक नौकरी ढूंढ़ दूंगा। नंदन पूरी रात जागता रहा और उस आदमी के बारे में सोचता रहा। रात को ही फैसला कर लिया था की वो बिजनेस करेगा जो उस आदमी ने कहा था। उसने अपने पिताजी को बिना बतायह उस आदमी से मिला और बिजनेस करने लगा। 5 साल बाद नंदन बहुत सारा पैसा कमाता है। उसके पास एक अच्छी गाड़ी भी है। एक दिन उसने अपने पिताजी से पूछा पिताजी क्या मैंने आपकी बात नहीं मानके गलती की? पिताजी ने जवाब दिया, नहीं उस समय में गलत था। तुमने सही फेसला लिया था।

में यह नहीं कह रहा हु की हमें अपनी माता और पिता की बात नहीं सुननी चाहिए। में यह कह रहा हु की हम जो कुछ भी कर रहे है या करना चाहते है उसमें जो आदमी सफल है उसकी सलाह लेनी चाहिए। उसके अलावा किसी और ब्यक्ति से नहीं। चाहे वो अपने घर के लोग, रिश्तेदार और पोरोसी ही क्यों ना हो। आजकल इन्टरनेट का युग है आपको अगर कोई नहीं मिल रहा है तो आप उसका सहारा ले सकते है। या फिर किताबो का सहारा ले सकते है। सोचिए और बिचार कीजिये। अपनी क्षमता को बढाइयह। आप जरुर सफल बनेंगे और एक दिन आप बहुत सारे धन और संपत्ति के मालिक बन जायेंगे और समाज का कल्याण कर पाएंगे।

“किताब ही इंसान का असली मित्र होता है”

३. <u>अच्छा भविष्य (Security):-</u> आज आप जो कुछ भी कर रहे है वो आपके भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए कर रहे है। हम हमेशा यही सोचते रहते है की कैसे हम और हमारे परिवार का भबिष्य सुरक्षित रख सके। हम अगर ना रहे तो हमारे परिवार को कठिनाइयो का सामना करना ना परे। जरा सोचिये! आप जो कर रहे है क्या वो आपके परिवार के लिए ठीक है या और भी जरुरी है? आप अभी जिस हालत में है क्या वो ठीक है? आपको क्या लगता है जिस हालत में चीजों और सामानों के दाम बढ़ रहे है, उस हिसाब से आप जो कर रहे है वो आपके परिवार के लिए भबिष्य को ठीक कर सकता है? क्या आप खुश है? ज़रा अपने दिल पर हाथ रख कर बोलिए। बिलकुल नहीं। ठीक है ना? आपने कभी यह सोचा है की अगर किसी कारण बश आप अगर बिस्तर पर एक दो साल रह गयह किसी बीमारी के कारण तो क्या आपका परिवार ठीक तरह से चल पायहगा? ज़रा सोचिये....। आप ऐसा कौन सा काम कर रहे है जिससे आप अगर ना रहे तो आपकी परिवार ठीक तरह से खा-पी सकेगी? थोड़ा शांत मन से सोचिये.........।

सुरक्षित भबिष्य का क्या मतलब है? इसका मतलब यह है की अगर आप कभी ना रहे या किसी कारण बश अचल हो जाये तो आपका परिवार आसानी से गुज़ारा कर सके और किसी चीज़ की कमी ना हो आपके परिवार को। आप अगर कोइ नौकरी कर रहे है, जिसमें अगर आप कुछ दिन या महीनो तक ना जाये तो आपका तनख्वाह कट जाता है, तो समझिये आपका भबिष्य सुरक्षित नहीं है। अगर आप कोइ बिजनेस कर रहे है जहा पर आप नहीं गयह तो इनकम बंद हो जायेगा तो समझिये आपका भबिष्य सुरक्षित नहीं है। कुछ नौकरी करने वाले यह सोचते है की अभी जो कमाई हो रहा है उससे खीच-खीच के परिवार चल रहा है लेकिन, भबिष्य में जब सेलरी बढ़ेगी तब ठीक तरह से चलेगी। तो में आपको बतादु की भबिष्य में अगर आपकी सेलरी बढ़ेगी तो सामानों के दाम भी बढ़ेंगे और आप जिस अबस्था में अभी चल रहे है भबिष्य में आप उसी अबस्था में ही चलेंगे।

इसका यह मतलब नहीं है की आप नौकरी छोरदे। इसका यह मतलब है की आप किसी एक इनकम पर भरोसा मत कीजिये। अगर आप एक अच्छा और सुरक्षित भबिष्य चाहते है तो नौकरी के साथ साथ आपको कुछ और भी करने के लिए सोचना पड़ेगा। अगर कोइ बिजनेस करना चाहते है तो यह भी सोचना जरुरी है की आप काम करेंगे तब इनकम तो हो और आप जब काम नहीं करेंगे तब भी इनकम हो और बिजनेस दिन व दिन बढ़ता जाये। कुछ लोग बोलते है की बस यह इनकम ही ठीक है परिवार ठीक ठाक से चल रहा है। इतना ज्यादा काम करने का समय कहा है? क्या आप भी ऐसा सोचते है? क्या आप भी यही चाहते है की मार्किट में जाकर मनचाहा सामान ना खरीदकर बजेट में जो होता है वही खरीदना? चाहते कुछ और है और खरीदते कुछ और है। फिर भी कहते है पैसे की जरुरत नहीं है। क्या आप यहही चाहते है की आपके बच्चे आपके जैसे ही जिए। क्युकी आप जो इनकम कर रहे है ज्यादा से ज्यादा आपके परिवार के लोग खा-पीके गुजरा कर लेते है और इससे अधिक कुछ नहीं। असल में यह आपका दोष नहीं है। आप जहा पर काम कर रहे है उसका मालिक आपको इतना काम देता है की आपका दिमाग उस काम के अलावा और कुछ सोच ही नहीं सकता। आपका दिमाग खोखला कर देता है। आपके जितने भी सारे गुण है वो सब दवाव में आकर खो जाते है और आप नौकरी के इलावा और कुछ सोच ही नहीं पाते। शाम को घर लौटने के बाद आपका मन और शारीर इतना थक जाता है की आप आगे और कुछ करने के लिए तैयार ही नहो हो पाते और सोच भी नहीं पाते। अगर सोच भी लेते है तो अगले दिन के काम के बारे में सोचने लग जाते है।

यह होता है आम आदमी की जिन्दगी।

आप जितना परिश्रम करते है उतना परिश्रम अगर आपके बच्चे ना करे, यह चाहते है तो आपको आगे बढ़ने के लिए एक कदम उठाना होगा। और वो कदम है किताब पढ़ना। जी हां किताब ही एक ऐसा साधन है जो आपको आगे क्या करना है वो बताएगी। और आपको आगे कैसे बढ़ना है वो बताएगी। आप हमेशा सेल्फ हेल्फ वाले किताब पढना शुरु कीजिये। पहले पहले थोडा मुस्किल होगा लेकिन रोज 25 से 30 मिनिट अगर आप पढ़ते है तो आपकी जिन्दगी भी बदलना शुरु हो जाएगी। किताब आपके मानसिक शक्ति को शो गुना बढ़ा देगा और आप दूर की सोच पाएंगे। याद रखिये मैंने पहले भी कहा था इंसान दो चीजों से ही अमीर बन पता है

“**एक किताब पढ़ने से और दूसरा सफल ब्यक्ति के साथ मिलने से**”।

हर रोज़ एक समय तय कीजिये किताब पढ़ने के लिए। और शुरु कीजिये सफल ब्यक्ति से मिलना। अगर आपको आपके आस-पास कोई भी सफल ब्यक्ति नजर नहीं आ रहा है तो सफल ब्यक्तियो की किताब पढ़ना शुरू कीजिये। क्योंकी सफल ब्यक्ति ही आपको कैसे सफल बना जाता है वो सिखाते है। अगर आप असफल ब्यक्ति के साथ

मिलते है तो आपको वो कैसे असफल बना है वो बताएगा और आपको कमज़ोर कर देगा। इसलिए आपको जरुरी हैं एसे लोगो के साथ मिलना जो अपने काम में सफल हुए है। आपको सिर्फ चुनना है सही रास्ता और देखियहगा एक दिन आप भी सफल बन जायेंगे और आप भी अमीर बन जायेंगे। और एक दिन आपके और आपके परिवार का भबिष्य भी सुरक्षित नजर आ जाएगी।

**"इंसान अपने ज्ञान के मुताबिक
घन कमाता है"**

४.अच्छा समय (Good Time) :- क्या आप नहीं चाहते है की आपका पूरा दिन अच्छा हो? क्या आप नहीं चाहते है की आपका समय कभी ख़राब न हो? क्या आप नहीं चाहते है की आपके पास बहुत सारा समय हो जो आप अपने परिवार के साथ बितायह? क्या आप नहीं चाहते है की आपके जीवन में कभी कोई कस्ट और दुःख ना आए? यह सब आप चाहते है। सिर्फ आप ही नहीं संसार के सभी प्राणी यही चाहते है। तो फिर आप एक बार यह सोचिये की आप यह सब पाने के लिए क्या करते है? आपको पता है? संसार के सभी लोग ऐसा ही चाहते है लेकिन सिर्फ कुछ लोगो के जीवन में ही ऐसा होता है। इसका कारण है सही काम नहीं करना। आप दुसरो को निंदा करते है तो फिर आपके जीवन में अच्छे दिन कैसे आएंगे? आप अपने लाभ के लिए दुसरो का नुकसान करते है तो फिर आपके जीवन से

ख़राब दिन कैसे जायेंगे? आप दुसरो को तकलीफ देके इनकम करते है, घुस लेते है, लोगोको ठगते है तो फिर आपके जीवन में कैसे अच्छे दिन आएंगे?

भगवान् श्री कृष्ण जी ने श्रीमद भागवत गीता में कहा है **"जो इंसान सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए काम करता है वो ब्यक्ति खुद का क्षति तो करता ही है और साथ में समाज को भी हानि पहुंचाता है"**। और **"जो ब्यक्ति दुसरो की कल्याण को सोचकर काम करता है समाज के उन्नति के साथ साथ उसकी भी उन्नति निश्चित हैं"**।

लोग हमेशा खुदके लाभ के लिए सोचते रहते है। कैसे थोड़ा लाभ हो जाये। और किसीको मदत की बात आती है तो सबसे पहले वह खुदका लाभ है की नहीं वो सोचते रहते है। वह थोड़ा ठीक है। अगर किसीकी कोई क्षति ना हो तो। कुछ ऐसे भी लोग है जो सारा दिन दुसरो की क्षति करके खुदकी लाभ करने की सोचते रहते है। असल में बात यह है की अगर आप किसीको नुकसान पहुचाके लाभ भी कर लेते है तो वो थोड़े समय के लिए ही रहता है। वह कमाया हुआ पैसा बाद में बहुत ज्यादा क्षति करता है। कभी कभी आप सोचते ही रहते है की क्यों भगवान् ने हमें इतना कस्ट दिया है? क्यों इतना दर्द दिया है? ऐसा जब खयाल आया तो उसका उत्तर खुद पर ढूँढना चाहिए। क्युकी आपने किसीको कभी क्षति पहुचाया होगा इसलिए आज ऐसा हो रहा है। अगर ऐसा नहीं है तो आप बिलकुल चिंता मत कीजिये आपका समय ठीक हो जायेगा। आप दिन भर परिश्रम करके रोजगार करते रहते है और किसीको दान करने की जब बात आती है तो मन छोटा हो जाता है। वह तो स्वभाबिक है। लेकिन क्या आपको पता है? श्री चाणक्य जी ने क्या कहा था? वो कहते थे की **"अगर आप आपना बुरा वक्त ठीक करना चाहते हो तो दानी बनो और अपनी कमाई का एक हिस्सा गरीब और बेसहारा लोगो के भलाई के लिए इस्तमाल करो"**।

लोग हमेशा यही सोचते रहते है की भगवान् को अच्छा प्रशाद चढ़ाने से और दक्षिणा देने से भगवान् खुश हो जायेंगे और हमें बहुत सारी खुशिया देंगे। और इसलिए तरह तरह के फल, लड्डू और मिठाइयाँ भगवान् को चढ़ावा देते है और भगवान् के सामने रखे थाली में पैसा देके भगवान् से खुशिया मांगते है। इंसान यही बिस्वास करता है की ज्यादा दक्षिणा देने से भगवान् बहुत ज्यादा खुश हो जायेंगे और अपार कृपा बरसाएंगे।

इसपर में अपना एक कहानी आपको बताता हु। शादी के पांच साल बाद में अपनी पत्नी और बेटे के साथ गुवाहाटी गया था माँ कामख्या के दर्शन के लिए। सुबह उठकर नहा-धोकर मंदिर के लिए रवाना हो गए। मन में श्रद्धा लेकर। वहा बहुत सुन्दर बातावरण था। लोग दर्शन के लिए लाइन लगाकर खड़े थे। बहुत लम्बी लाइन लगी थी। अचानक दूसरी और एक लाइन पर नज़र पर गई। आखिर दो लाइन क्यों है? पूछा तो बताया की वहा 50 का एक लाइन लगा हुआ है जिसको VIP लाइन कहते है। बिना पैसे का जो लाइन था वो सबसे ज्यादा लम्बा था। मतलब आपको जल्दी अगर माँ का दर्शन करना है तो टिकट

लेना पड़ेगा। मैंने 50 रुपयह का 2 VIP टिकट लिया और परिवार के साथ छोटा लाइन पकड़ा। क्युकी बिना पैसे वाले लाइन पर बहुत ज्यादा भीड़ थी। तक़रीबन एक घंटा लाइन पर खड़ा रहा और सोचता रहा की इतने सारे लोग दर्शन करने के लिए हर रोज़ जाते है और इतनी टिकट काटते है इतने पैसो का क्या होता होगा? सिर्फ टिकट ही नहीं साथ में चढ़ावा भी परता है। किसीसे पूछा तो बताया की सारा पैसा मंदिर की देख-रेख और साफ-सफाई के लिए खर्च करते है। मन में यह सवाल आया, "क्या इतना सारा पैसा सच में खर्च होता होगा"? जो भी हो उस टॉपिक को छोड़ आगे बढ़ता गया। हाथ में फूलो की माला, माँ के लिए चादर, नारियल, मिठाई, अगरबत्ती और मोमबत्ती लेकर श्रद्धा के साथ बढ़ता रहा।

अन्दर जाने से पहले ही हमने एक ब्राह्मण को ठीक कर लिया था। वो हमारे लिए मंत्र पड़ेंगे और उसके बाद उनको दक्षिणा भी देना पड़ेगा। ऐसे बहुत सारे ब्राह्मण वहा मिल जायेंगे जो आप जाते ही आपके पीछे पर जायेंगे। लेकिन हमने अलग से एक बुजुर्ग ब्राह्मण को ठीक कर लिया था जो सोभाग्य से बहुत अच्छे थे। अन्दर जाने के बाद आपके पास थोड़ा ही टाइम बचता है पूजा के लिए। क्युकी इतना भीड़ होता है की ज्यादा समय वहा रहने नहीं देते। खड़े खड़े ही पूजा करवा लिया और आगे बढ़ते गयह। हर एक द्वार पर साधू कोई न कोई भगवान् को लेकर फुल और अगरबत्ती जलाकर बैठा रहता था और प्रणाम करने के लिए बोलता था। प्रणाम किया तो दक्षिणा भी देनी पड़ती थी। में भी श्रद्धा के साथ गया था हर द्वार पर 100 रुपयह का नोट निकालकर दक्षिणा कर देता था और सोचता था कही कम ना हो जाए और माँ नाराज ना हो जाए। बीच-बीच में हमारा जो ब्राह्मण था वो दक्षिणा कम देने के लिए बोलता था। मैंने उनकी बात नहीं सुनी और उल्टा सोचता रहा की कही वो अपनी दक्षिणा कम ना हो जाए इसके लिए ऐसा बोल रहे है। सब कुछ ख़तम करके वहा से निकले और नारियल फोड़ने के बाद पूजा ख़तम करके ब्राह्मण देवता को दक्षिणा देने के लिए पूछा। उन्होंने कोई डिमांड नहीं किया और मैंने अपने आप से ही दक्षिणा दे दिया। और तब उन्होंने एक बात बोला की **"भगवान् पैसा ज्यादा देने से खुश नहीं होते भगवान् तो मन से श्रद्धा और प्रार्थना करने से खुश होते है"**। तब में सुन्न पर गया, क्या हुआ पता नहीं। इतने समय उनको ठीक तरह से देखा नहीं था तब उनके मुख पर देखा तो एक प्रकाश उनके चहरे से निकल रही थी, ऐसा लगा। कुछ समय के लिए लगा की भगवान् मुझे उनके मुख से कुछ बोल रहे थे। फिर उनके चरण स्पर्श कियह हम सब ने और हम चले आया। पूरा दिन वही बात मुझे याद आती रही। सही तो कहा था उन्होंने **"भगवान् पैसो से नहीं श्रध्दा से प्रसन्न होते है"**। और आज भी जब में मंदिर पर जाता हु तो वही बात याद आती है। याद आता है वो टिकट की बात। इतना सारा पैसा अगर सिर्फ एक मंदिर पर चढ़ावा पड़ता है तो पुरे देश में इतने मंदिर, इतने मसजिद, इतने चर्च और इतने गुरुद्वारा है जिनमें कितना चढ़ावा परता होगा? वहा लोगो को खिलाते है, वो अच्छी बात है। लेकिन जितना वह खर्च

होता है उससे 1000 गुना अधिक पैसा वहा दान करते है भक्त। सोचिये अगर इन सब पैसो में से अगर 20 प्रतिशत भी गरीब लोगो को बाट दिया जाए तो इस देश में कोई भी गरीब नहीं रहेगा। ना ही सोचालय की असुबिधा होगी न ही किसान आत्महत्या करेंगे और ना ही गरीब लोग झोपरो में रहेंगे।

यह संसार और प्रकृति संपूर्ण लेने और देने पर निर्भर करता है। अगर आपने किसीको अच्छा दिया तो आपको भी अच्छा मिलेगा। अगर अपने किसीके बुरे समय पर सहायता किया है तो आपके बुरे समय पर भी आपको सहायता करने के लिए लोग आयेंगे। अपने जिसको सहायता किया है वो अगर नहीं भी आता है तो भगवान् आपके सहायता के लिए किसी और को भेज देंगे। यहही नियम है। भगवान् हम सबका खयाल रखते है। इस बात को कुछ लोग अस्वीकार कर सकते है लेकिन यही सच है। आप निश्चिंत रहे आपका समय भी अच्छा होगा। आपके सारे दु:ख और दर्द मिट जायेंगे। इसके लिए एक काम करना होता है और एक नियम का पालन करना परता है। और वह है बिना स्वार्थ के लोगो की सेवा करना। लोगो को खुश रखना। प्रकृति और भगवान् के सभी चीजों के लिए धन्यबाद दीजिये। आपके जीवन के लिए भगवानको धन्यबाद कीजिये। एक दिन आपका भी अच्छा समय आयागा। आपको सारी ख़ुशीया मिलेगी। बस थोड़ा धेर्य रखने की जरुरत है। बिस्वास रखिये आपका जीवन भी सुन्दर और सुखमय होगा।

“समय को बैठकर बिताने वाला

कभी अमीर नहीं बन पता”

अमीर बनने का रस्ता

आप अमीर बन सकते है। अमीर बनने के लिए कोइ पैसो की जरुरत नहीं होती। और न ही शिक्षा की। अगर आपके पास एक रूपया भी नहीं हो तब भी आप अमीर बन सकते है। आपने बहुत सारे ऐसे लोगो को देखा होगा जो बिलकुल पढ़े लिखे नहीं है लेकिन अमीर है। उनको देखके आप यह सोचते होंगे की वो कितने भाग्यवान है और मेरा भाग्य कितना ख़राब है। यही सोचते है न आप? अगर ऐसा आप सोच रहे है तो आप गलत सोच रहे है। इसके लिए अपने भाग्य को दोष मत दीजिये। अमीर बनने के लिए आपको सिर्फ एक चीज़ की जरुरत है और वह है “इच्छा”। जी हां इच्छा शक्ति के जरियह ही आप सबकुछ पा सकते है। घन, दौलत, प्यार और संपत्ति आदि। आप अगर अंतर मन से कुछ चाहते है और उसको पाने के लिए काम करते है तो प्रकृति और भगवान् आपको वह देने के लिए सहायता करती है। यह याद रखिये।

इस धरती पर जितने भी लोग अमीर बने है वो सब इस इच्छा शक्ति का ही इस्तमाल करते है। अगर आप फिर भी इसे विश्वास नहीं करते है तो यह सोचिये की अमीर आदमी के पास क्या है जो आपसे बिलकुल अलग है? अमीर ब्यक्ति के पास दो आख, दो कान, एक नाक, दो हाथ, एक दिमाग और दो पैर है जो आपके पास भी है। तो क्या भाग्य है? जी नहीं उनकी इच्छा और उनका परिश्रम यह दोनों ही चीज़ जो आप से अलग है। अमीर ब्यक्ति ने एक बार यह ठान लिया था की वो अमीर बनेगा इसलिए वो अमीर बन पाया है। लेकिन आप जब भी काम का समय होता है तो अलस होकर उसे टाल देते है। है की नहीं? अभी भी समय है। इच्छा शक्ति का इस्तमाल कीजिये और अमीर बनिए। लेकिन एक बात का ध्यान रखिये अगर आप सिर्फ इच्छा शक्ति का इस्तमाल करके मन में अमीरी का ख्वाब रखके घर में बैठ के सपने देखते है, तो आप कभी अमीर नहीं बन पाएंगे। ज्यादातर लोग यहही करते है अमीर तो बनना चाहते है और ख्वाब भी देखते है लिकिन परिश्रम करना नहीं चाहते। और अपने भाग्य को दोष देते रहते है। याद रखिये भगवान पंछी

को भी खाना देता है। उसे पैसो की ज़रूरत नहीं परती। लेकिन उसको भी खाना ढूँढना पड़ता है। क्या आप यह चाहते है? पशु और पक्षी की तरह खाना खाके जिन्दगी बीताना। अगर हां तो आप किसको झूट बोल रहे है? खुदको? या अपने परिवार के लोगोको? आप दिन भर अपने परिवारको और खुदको यह झूट बोलते रहते है की आप अमीर बनेंगे, यह खरीद्के देंगे, वो खरीद्के देंगे, गाड़ी देंगे, बंगला बनायेंगे, सारी जरूरतों को पूरा कर देंगे और नजाने क्या-क्या। आप पंछी की तरह रहते है और अमीर बनने का ख्वाब देखते है क्या यह संभव है? आपके चारो तरफ के लोग यही करते है जो आप कर रहे है। अगर आप चाहते है सचमें बदलाव लाना तो आपको भी बदलना पड़ेगा। आप खुद सोचिये क्या करने से आप अमीर और सफल ब्यक्ति बन सकते है? सोचिये और आगे बढ़िये।

देखियह सफल और कामयाब बनने के लिए कोइ कठिन काम करने की जरुरत नहीं है। पहले आपको खुदको बदलना होगा। अगर आपको लगता है की आप बदल सकते है तो आप इस किताब में जो कुछ नियम दिए गए है उसको अच्छी तरह से पढ़िए और अपने जीवन पर आजमाना शुरू कर दीजिये। जो नियम यहाँ पर बतायह गयह है वो नियम दुनिया के कुछ ही लोग आपनाके सफल और अमीर बने है। किताब में जो रहस्य के बारे में बताया जा रहा है वह अच्छी तरह से अपने जीवन में प्रयोग करना शुरू कर दीजिए। इसमें पहले पहले दिक्कते आएंगी और आपको लगेगा की काम नहीं कर रहा है, लेकिन आपको धेर्य रखना है और आगे बढ़ना है। में आपके सामने वो रहस्य लेके आया हूँ जो आप जानने के बाद और भी धन संपत्ति, खुशिया अपने जीवन में आकर्षित कर सकते है।

अमीर बनना आपका अघिकार हैं। क्यों इस अधिकार से बंचित रहेंगे। **बिल गेट्स बोलते है "अगर आप गरीब पैदा हुए है तो इसमें आपकी गलती नहीं है, लेकिन अगर आप गरीब होके मरते है तो यह आपकी गलती है"**। भगवान ने आपको सब कुछ दिया है। आप खुद ही इसे देख नहीं पाए है।

रश्ते का एक लंगड़ा भिखारी भीख मांग रहा था और उसी रस्ते पर कुछ लोग नशा करके बक-बक करके जा रहे थे। भिखारी मन ही मन बोल रहा था यह लोग एक नंबर के गधे है। इन सबकी मति मारी गयी है। इनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है। भगवान ने इनको सब कुछ सही सलामत दिया फिर भी वो इसका फ़ायदा नहीं उठा पा रहे है। रश्ते पर नशा करके इधर उधर गिर रहे है। अगर इनकी तरह मुझे भी हाथ पैर सही सलामत दिया होता तो आज में भीख नहीं मांगता। काम करके अमीर बन जाता और शांति से रहता।

आपने कभी यह सोचा है आपके चारो तरफ जो लोग अचल और असहाय है वो आपके बारे में क्या सोच रहे है? अभी भी समय है थोड़ा सोचना पड़ेगा। भगवान ने आपको सबकुछ दिया है। क्यों आपको खुद पर बिस्वास नहीं है। आपको लड़ना होगा और खुदको बोलना होगा की आप भी आगे बढ़ सकते है और कामयाब बन सकते है। आप कर

सकते है। जब आप ऐसा करना शुरू कर देंगे तो परिबर्तन जरुर आएगा। आप भी सफल और अमीर बन जायेंगे। कुछ लोग खुदकी असफलता का कारण दुसरो को और सरकार को देते है। कुछ लोग यह जरुर बोलते है की उसने हमको क्या दिया? में पैसे के बिना कैसे बिजनेस शुरू करू? कोइ मदत नहीं करता, सरकार भी कोई मदत नहीं करती, सरकार ने हमको क्या दिया? कहा है नौकरी? बहुत बड़े बड़े वादे तो किया था लेकिन लोन नहीं मिल पाया? बगेरा वगेरा। यह कैसी सोच है पता नहीं? खुद कभी यह नहीं बोलते की मैंने सरकार को क्या दिया? दुसरो को दोष देने से पहले खुद यह नहीं सोचते की मैंने किसीको क्या दिया? जब यह सोच आने लगेगी तो समझिये आपकी जिन्दगी बदलने जा रही है। अमरिका के जैसे देश में लोग यह सोचते है की हम कैसे सरकार को ज्यादा से ज्यादा कर यानि टेक्स दे पाएंगे? लेकिन हमारे देश में ज्यादा से ज्यादा लोग यही सोचते है की सरकार से कितना ज्यादा टेक्स चुरा पाएंगे? कैसे काला धन दुसरे देशो में छिपाया जाए? जनहित के लिए पैसा जो दिया गया है वो कैसे ज्यादा से ज्यादा खाया जाए? ऐसी होती है लोगो की मानसिकता। कुछ लोग अच्छी तरह से पढ़ते नहीं हैं और नौकरी नहीं मिलने पर सरकार को दोष देने लग जाते है। सही समय पर काम नहीं करके नौकरी के भरोसे रहते है और सरकार को दोष देते रहते है। हमारी सरकार ने कुछ नहीं किया। सरकार कितना करेगा हमारे लिए वो भी तो थोड़ा सोचना पड़ेगा न? सबकुछ अगर सरकार करेगी तो आप क्या करेंगे? घंटा? 125 करोड़ की जनता है और दिन व दिन जनसँख्या इतनी बढ़ रही है देश का। इन सब के लिए कर-कर के थक जायेंगे फिर भी नहीं हो पायेगा। इसलिए सरकार भी अब वादा करती रहती है जो पूरा हो नहीं पाती इसलिए वादे से ही संतुष्ट होना पड़ेगा। वादा नहीं करेंगे तो वोट कैसे मिलेगा? इसलिए दुसरो पर भरोसा करना छोड़ना पड़ेगा और खुद ही कुछ करने के लिए आगे बढ़ना होगा। डरिये मत, आप ही एक ऐसे ब्यक्ति है जो सब कुछ कर सकते है। यह सोचिये और आगे बढ़िये। आप जरुर सफल बनेंगे। सफल बनने के लिए वो बीमार सोच आपको बदलना पड़ेगा। तभी आप सफल बन पाएंगे।

“सफल वोही बन पता है जो अपने काम को

हर रोज थोड़ा और ज्यादा करता है”

विश्वास

सफल और अमीर आदमी बनने के लिए अपने ऊपर बिश्वास होना चाहिए। आप जो बिश्वास करेंगे वो बन जायेंगे। आप अगर सोच रहे हो की आप ज्यादा पैसा कमा नहीं पाएंगे तो आप ज्यादा पैसा नहीं कमा पाएंगे। अगर आप सोच रहे है की आप अमीर बन पाएंगे तो आप जरुर अमीर बन पाएंगे। यह जो सोच होता है यह हमारे बिश्वास से उत्पन्न होता है। गलत बिश्वास गलत फल देगा। सही बिश्वास सही फल देगा। अपने आप पर बिस्वाश रखिये की आप भी अमीर बन पाएंगे। आप बहुत सारे लोगो की मदत कर पाएंगे। आप गरीबो की मदत कर पाएंगे। चाहे आपके पास एक रूपया भी ना हो तब भी आपका बिश्वास आपको एक दिन अमीर बना देगा। हां लेकिन इसमें समय लगेगा।

गौतम एक आलसी लड़का था। वो हमेशा भगवान को याद करता था और प्रार्थना करता रहता था की “प्रभु आप मेरे जीवन में एक चमत्कार कर दो की में बहुत सारे पैसा कमा पाऊ”। मेरी लोटरी लगा दो, चमत्कार करदो, आपके आशीर्वाद के बिना में कभी अमीर नहीं बन पऊंगा। बहुत सारे लोगो को आपने कृपा की है इसलिए वो सब अमीर बन पाए है। वगेरा वगेरा......। और एक दिन भगवान उसके प्रार्थना के समय प्रकट हो गए। और गौतम से पूछने लगे की तुम्हे क्या चाहिए। गौतम बहुत खुश हुआ और बोला प्रभु आप बस एक आशीर्वाद दे दीजिये की में अमीर बन जाऊ। बहुत सारा पैसा हो, गाड़ी हो, बंगला हो, में भी गरीबो की मदत कर सकू। तब भगवान बोले ठीक है इसके लिए तुम्हे एक काम करना पड़ेगा। क्या तुम करने के लिए तैयार हो? गौतम बोला हां प्रभु आप जो काम बोलेंगे वो में करूंगा। तब भगवान बोले तो फिर ठीक है में तुम्हे एक मन्त्र का किताब दे रहा हु। लेकिन इसे कभी मत खोलना, नहीं तो इसकी शक्ति ख़तम हो जाएगी। बस इसे हर रोज़ पूजा करके एक बार छु लेना और काम पर निकल जाना। जिससे तुम जो भी काम करोगे वो बहुत अच्छा चलेगा और तुम अमीर बन जाओगे। लेकिन तुम इसे सिर्फ 5 साल ही रख सकते हो और 5 साल के बाद में दुबारा इसे लेने आऊंगा। और इस बात को तुम्हे किसीको नहीं बोलना है। क्या तुम्हे यह मंजूर है? तब गौतम हशी ख़ुशी से भगवान को बोलने लगा हां प्रभु 5 साल मेरे लिए बहुत है। में इसका इस्तमाल करके बहुत सारा दौलत कमा लूंगा।

आपने जो कृपा किया है प्रभु इसके लिए आपका कोटि कोटि धन्यबाद। भगवान ने एक लाल रंग का किताब दिया और चले गए।

गौतम बहुत खुश था। हर रोज़ वो उस किताब को छुकर प्रणाम करता और काम पर निकल जाता। उसके मन में यह बात हर रोज़ याद आती थी की 5 साल के बाद वो किताब लेने आ जायेंगे और इसलिए इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाना है। लेकिन उसमें यह भी विश्वास था की वो अमीर बन जायेगा क्युकी भगवान ने उसे मंत्र की किताब दी है। उसका बिश्वास दो गुना हो गया। गौतम ज्यादा महनती बन गया। हर काम पर वो ज्यादा महनत लगाने लगा। वो दिन दो गुनी और रात चौगुनी करके काम करने लगा। दिन व दिन वो धीरे धीरे पैसा कमाने लगा। और देखते ही देखते वो 5 साल के अन्दर अमीर बन गया।

फिर एक दिन भगवान प्रार्थना के समय प्रकट हो गए। गौतम ने देखते ही भगवान को प्रणाम किया। भगवान पूछने लगे क्या तुम्हे अपने इच्छा के अनुसार धन प्राप्ति हुई। गौतम बोलने लगा "हां प्रभु आपने जो किताब दिया था उससे यह चमत्कार हो पाया है। आज मेरे पास सब कुछ है। आपका कोटि कोटि धन्यबाद प्रभु, आपका कोटि कोटि धन्यबाद"। भगवान बोलने लगे "अब तुम मुझे वो किताब दे दो"। तब गौतम ने किताब को भगवान को देने के लिए उठाया। फिर भगवान बोले "अब तुम उसे खोलकर देख सकते हो"। गौतम बहुत खुश था। इतने दिन उस किताब के अन्दर क्या चमत्कारी है वो देखने के लिए हमेशा उत्सुक रहता था। झट से उस किताब को खोला और पहला पन्ना देखा तो कुछ नहीं था। दूसरा पन्ना भी देखा तब भी कुछ लिखा नहीं था। तीसरा भी देखा वो भी खली था। ऐसा करते करते पूरा किताब देख लिया पर कुछ भी लिखा नहीं था। तब गौतम भगवान से पूछने लगे "प्रभु यहाँ तो कुछ भी लिखा नहीं है"! तब भगवान मुस्कुराते हुए बोले "बिलकुल इस किताब में कुछ भी लिखा नहीं है"। गौतम बोला "तो प्रभु में कैसे अमीर बन गया"। भगवान बोले वो है "विश्वास", पहले तुम्हे अपने आप पर विश्वास नहीं था इसलिए तुम कोई भी काम नहीं करते थे और अमीर नहीं बन पाए। लेकिन जब तुम्हारे अन्दर बिश्वास पैदा हो गया की भगवान ने आशीर्वाद दिया है अमीर बन जाओगे, तब तुम काम करने लगे। यह विश्वास ही लोगो के पास नहीं होती और इसलिए वो सफल नहीं बन पाते। जिन लोगो के पास यह बिश्वास होता है वही सफल बन जाते है। बिश्वास के साथ जब परिश्रम जुड़ जाता है तब इंसान सब कुछ प्राप्त कर सकता है। गौतम यह जो राज आज तुम्हे पता चला है वो तुम उन लोगो को बताओ जिनके पास बिश्वास की कमी है। आज से यह दायित्व तुम्हारा है। मेरा यह सन्देश तुम सब तक पहुँचाओ ताकि सभी सफल बने।

गौतम को सब कुछ पता चल गया और भगवान को प्रणाम करते हुए कहा "हे प्रभु आपका यह सन्देश में सबको बताऊंगा। आज से में यह काम करूँगा"। भगवान तब वहा

से चले गए। उसी दिन से गौतम उस काम पर लग गया और लोगो को सफलता का राज बताने लगा।

दोस्तों आपके पास भी बिश्वास की कमी होगी। इस कहानी ने आपको यह बात अच्छी तरह से समझाई होगी। आपको भी आज से अपने अन्दर बिश्वास पैदा करना है। इस किताब को पढ़ने का मतलब है की आप भगवान के सन्देश को पढ़ रहे है। मन में कोई शंका नहीं रखना है और आगे बढ़ते जाना है। आप एक दिन सफल बन जायेंगे।

रुको नहीं झुको नहीं

"रुको नहीं झुको नहीं, तुम एक दिन जीत जाओगे।
रुको नहीं झुको नहीं, तुम तारो को छु पाओगे।।
गगन भी झुक जायेगा, पहाड़ भी टूट जायेगा।
यह होशले की गर्मी देख, बरफ भी पिघल जायेगा।।
रुको नहीं झुको नहीं, तुम एक दिन जित जाओगे।
रुको नहीं झुको नहीं, तुम तारो को छु पाओगे।।
यह मुश्किले सारी तेरी, तुमको छोड़ जाएगी।
कठिनाइया सारी तेरी, डर डर के भाग जाएगी।
बिश्वास की अग्नि जब, ज्वालामुखी बन जाएगी।।
रुको नहीं झुको नहीं, तुम तारो को छु पाओगे।
रुको नहीं झुको नहीं, तुम एक दिन जीत जाओगे।।
तुम एक दिन जीत जाओगे।।
तुम एक दिन जीत जाओगे।।

"अगर आप ढूंढते है तो

आपको ज़रूर मिलेगा"

सकराक्त्मक स्वभाव

अगर आपको सफल बनना है तो सबसे पहले पॉजिटिव सोच रखनी परेगी। निगेटिव सोच वाले लोग, नेगेटिव बाते इन सब से दूर रहना होगा। थोड़ा सा बदलना होगा आपको। निगेटिव सोच वाले लोगो से दूर रहने का मतलब यह नहीं है की आप उन लोगो को बिलकुल ही तुच्छ समझे। मेरे कहने का मतलव यह है की आप उन लोगो को कभी बदल नहीं पाएंगे बल्कि वो लोग आपको उनकी बाते सुनाके आपको डर दिखाके आप जो करना चाहते हो उस उद्देश्य से आपको दूर ले जायेंगे। आपके विस्वास और साहस को तोड़ देंगे और उनके जैसे सोचने के लिए मजबूर कर देंगे। यह उन लोगो का दोष नहीं है। हलाकि वो लोग कभी भी अपने आप पर बिस्वास ही नहीं कर पाए और इसलिए आगे भी बढ़ नहीं पाए है। कैसे पहचानेंगे एसे लोगो को? एसे लोग बहुत आलसी होते है, दिनभर दुसरो की बाते करते रहते है, एसे लोगो के मुख से कभी भी अच्छी बाते नहीं सुन पाएंगे, कुछ होने से ही शिकायत करने लगते है, हमेशा खुद के काम को दुसरो के द्वारा करने की चाहत रखते है, दुसरो की गलतिया निकलते रहते है, समय मिलते ही गप्पे मारने और टीबी देखने बैठ जाते है, गलती होने पर उसे दुसरो के ऊपर थोप देते है, हमेशा दुसरो की हसी उड़ाते रहते है, खुदको बहुत ज्यादा समझदार मानते है और दुनिया में उसे ही सब कुछ पता है ऐसा व्यबहार करते है आदि।

एसे लोग कभी आपको अच्छा रस्ता नहीं दिखा पाएंगे। वल्कि आपको अंधेरे में धकेल सकते है। इसलिए आपको ऐसे लोगो से सावधान रहना होगा। ऐसे लोग आपके दोस्त, रिश्तेदार और पड़ेसी हो सकते है। कभी कभी घर के लोग भी एसे होते है। लेकिन ज्यादातर ऐसा नहीं होता। बाहर के लोगो को तो आप संभाल पाएंगे लेकिन अगर आपके घर में एसे लोग हो तो आप क्या करेंगे? याद रखिये ऐसे लोगो को आप कभी बदल नहीं पाएंगे। सबसे पहले आप खुद बदलिए और जब आपका बदला हुआ रूप देखेंगे और

सफलता दिखाई देगी तब वो लोग खुद आपको देखकर बदल जायेंगे। आपको उन्हें बदलने की जरुरत ही नहीं परेगी।

अभी सवाल यह उठता है की आप खुदको कैसे सकारात्मक रखेंगे। इसके लिए आपको कुछ अभ्यास करनी परेगी। रोज़ सुबह उठकर बोलिए “आज मेरा सबसे अच्छा दिन है”, “आज का दिन बहुत अच्छा जाने वाला है”। और नहाते वक्त बोलिए “में सबकुछ कर सकता हूँ”, “में हीरे की तरह चमकता हु”, “भगवान् मुझे सबकुछ देंगे”। और आइना देखते वक्त बोलिए “मैं बहुत सुन्दर हु”, “में पैसो को अपनी तरफ प्रचुरता से आकर्षित करता हु”, “में समाज के हित में काम करता हु”। रात को सोते समय प्रार्थना करके बोलना है “भगवान मेरे सारे समस्या का हल करते है”, “भगवान मेरे सारे जरूरतों को समय से पहले पूरा करता है”। यह कुछ बाते आपको हर दिन बोलना है। यह सिर्फ काम बोलके करना नहीं है यह बाते जब बोलेंगे तब आपके अन्दर भी ऐसा ही अनुभव होना चाहिए। अभी आपके पास नहीं ही फिर भी आपको यह सबकुछ आपका है ऐसा अनुभव करके खुशहाल मन से बोलना है। बिस्वास भी रखना होगा की आपको यह सब मिल जायेंगे या मिल रहे है। हो सकता है पहले पहले आपको ऐसा लगे की यह काम नहीं कर रहा है लेकिन आपको फिर भी यह लगातार करना है।

आप यह भी मत सोचिये की यह कैसे होगा? आप बस करते जाइयह। इसे करने के लिए कोई पैसा नहीं लगता बस करते जाइयह। एक बार करके देखियह तो, प्रमाण मिलना और परिवर्तन शुरू हो जायेगा।

बचपन से आप सुनते आया है कुछ करने से पहले आपके परिवार के लोग, आपके दोस्त, आपके रिश्तेदार सभी बोलते थे, “यह तुम नहीं कर सकते” “यह नहीं होगा”, “यह तुम्हारे लिए मुश्किल है” आदि। सिर्फ “नहीं” “नहीं” “नहीं” शव्द सुन-सुनकर हमारे दिमाग में पूरा घर करके बैठ गया है यह नहीं नहीं नहीं। कुछ सोचने से पहले ही निकल जाता है, नहीं हो सकता शायद? हमारे दिमाग पर तीन तरह से बाते घुसती है, पहला कानो से सुनके, दूसरा आखो से देखके और तीसरा मुह से बोलके। आखो से देखते थे की कोइ सफल नहीं हो पाता। कानो से सुनते थे की किसीको बिजनेस में घाटा हुआ है। वो सुनने के बाद हम भी उन सब की बाते दोहराते रहते है अपने मुह से। इन तिन अंगो से हमारे दिमाग में “नहीं” वाला शव्द घर कर जाता है। और निकल ही नहीं पाता। आपको इस “नहीं” शव्द को “हां” में बदलने के लिए यह सब बाते दोहराने परेंगे। ऐसा करते करते आपको महसूस होगा की पुराना वाला “नहीं” शव्द अब गायब हो गया है। और तभी से आपकी जिन्दगी आगे बढ़ने लगेगी और आप कमियाबी की तरफ एक और सीढ़ी चढ़ जायेंगे।

विस्वास रखिये। खुद पर विस्वास और भगवान् पर विस्वास। कुछ लोग खुद पर विस्वास नहीं करके हमेशा भगवान् के भरोसे रहते है। और कुछ नहीं करते। सोचिये तो

भगवान् कहा रहते है? कभी आपने भगवान् को देखा है? गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है की **"में हर प्राणी के अन्दर हु, हर मनुष्य के अन्दर हु"**। अगर आपको खुदपर बिस्वास नहीं होगा तो इसका मतलब है की आपको भगवान के ऊपर भी विस्वास नहीं है। अगर आप यह मानते है की भगवान अपके अन्दर है। वो हमें सबकुछ देंगे तो ऐसा भी बिलकुल नहीं होने वाला। किसीने सच ही कहा है की **"कभी भगवान के भरोसे नहीं रहनी चाहिए क्या पता भगवान आपके भरोसे हो?"** इसलिए विस्वास रखिये और काम पर लग जाइए। कर्म से अपना भाग्य बदल डालिए। परिवर्तन जरुर आएगा।

एक आदमी हर रोज़ भगवान को शिकायत करता रहता था की उसके पास ख़ुशी नहीं है, कुछ भी अच्छा नहीं है। और एक दिन तो जोर जोर से रो-रो के चिल्लाके भगवान को शिकायत कर रहा था। है भगवान् अपने मुझे कुछ भी नहीं दिया, हमेशा कष्ट दिया, दर्द दिया, दुःख दिया, ऐसा क्यों किया भगवान? में तो तुम्हारी पूजा करता रहता हु। अचानक भगवान सामने प्रकट हो जाते है और पूछते है क्या हुआ बेटा? क्या परिशानी है? तुम इतनी जोर जोर से क्यों रो रहे हो? तब वो आदमी गुस्से से भगवान् से बोलता है "क्या भगवान् जी आपने कभी मेरा खयाल नहीं रखा, आपने कभी मेरी जरूरते पूरी नहीं की, बहुत सारे कष्ट दिए" वगेरा वगेरा। में आपकी इतनी पूजा अर्चना करता रहता हु, हर दिन आपके लिए प्रशाद चढ़ाता हु, आपके सामने घंटो पूजा करके वक्त बर्बाद करता रहता हु, फिर भी आपने मुझे दुःख और कष्ट के अलावा कुछ भी नहीं दिया। भगवान जी तब थोड़ा सा मुस्कुराके बोले "देखो बत्स मैंने तो तुम्हे सब कुछ दिया जो तुमने मांगा था"। तब वो आदमी और भी ज्यादा गुस्सा में बोला "कहा दिया जो मांगा था?" इतनी गरीबी, इतना ज्यादा परिश्रम, इतना कष्ट दिया आपने। कुछ भी पसंदिता चीज़ खरीद भी नहीं सकता, अच्छा खाना, कोइ अच्छा फल भी खा नही सकता पैसो की तंगी की वजह से और आप बोल रहे हो की सब कुछ दिया।

तब भगवान् जी बोले "बत्स थोड़ा ध्यान से सोचके देखो तो, तुमने क्या मांगा था? क्या तुम हर दिन यह नहीं मांगते थे की "हे भगवान आप बस एसे ही मुझे और मेरे परिवार को पेट भरके खाना देते रहना" क्या यह नहीं मांगा था? तब वो आदमी बोला जी हां यह मांगा था। तो भगवान बोले क्या तुम्हे और तुम्हारे परिवार के लोग पेट भरके खाना नहीं खाते है? आदमी बोला जी हां खाते है। फिर भगवान पूछे "क्या यह नहीं मांगा था की अपने पड़ोसियों जैसी इज्जत और सम्मान रहे"? जी हां यह मांगा था, आदमी बोला। फिर भगवान बोले "क्या तुम्हारी इज्ज़त पड़ोसियों के साथ समान नहीं है"? तो वो आदमी बोला जी हा है। फिर भगवान बोले "तुमने तो यही मांगा था जो मैंने तुम्हे दिया है। क्या मैंने तुम्हे कभी बोला था की तुम ज्यादा मांगोगे तो में तुम्हे नहीं दूंगा"? आदमी बोला नहीं प्रभु। फिर भगवान बोले "तो क्यों तुमने ज्यादा नहीं माँगा? जानते हो मैं इंसान जो भी मांगता है वो

देता हु, हां इसमें थोड़ी देर हो सकती है। जानते हो मैंने तुम्हे ना मांगते हुए भी संसार के सबसे मुल्याबान चीज़ दिए है"? आदमी बोला नहीं प्रभु क्या है वो चीज़? भगवान बोलते रहे...

"सुनो मैंने तुम्हे जवान दिया है जिससे हमेशा अच्छी बाते बोलने के लिए लेकिन तुमने सारा जीवन अपने जवान से गलत ही बाते बोली है, गाली निकली है और हमेशा शिकायत करते रहे। मैंने तुम्हे दो कान दिए है, अच्छी बाते सुनने के लिए लेकिन तुमने जिन्दगी भर बुरी और गन्दी बाते सुनने में ही बितादिए। मैंने तुम्हे दो आखे दिए है, अच्छी चीज़े देखने के लिए लेकिन तुमने जिन्दगी भर ख़राब और बुरी चीज़े ही देखके बितादियह। मैंने तुम्हे दो हाथ दिए है जो काम करने के लिए लेकिन तुम तो थोड़ा सा काम करने के बाद आलसी बन जाते हो और अपना काम दुसरो से करवाते हो। मने तुम्हे दो पैर दिए है अच्छी राह पर चलने के लिए लेकिन तुम हमेशा गलत राह को ही अपनाते रहे। मैंने तुम्हे इतना अच्छा दिमाग दिया है, अच्छी सोच रखने के लिए और समाज का कल्याण करने के लिए, लेकिन तुम्हारा दिमाग हमेशा नकारात्मकता से भरा हुआ है और तुम हमेशा गलत ही सोचते रहे और सिर्फ अपने स्वार्थ के लिए ही सोचते रहे। अपने लाभ के लिए दुसरो की क्षति हो रही है इसके बारे में भी नहीं सोचते थे। मैंने तुम्हे जो कुछ भी दिया है उसका तो सही इस्तमाल कभी नहीं किया और मुझसे और ज्यादा की मांग कर रहे हो? कैसे दूंगा में तुम्हे"?

भगवान और बोलते रहे "जानते हो तुम जिस रस्ते से जाते हो हर रोज़ वहा एक लंगड़ा भिखारी बैठा रहता है जो हर रोज़ मुझसे मांगता रहता है की "प्रभु आपने इन सबको पैर दिए है फिर भी यह लोग कुछ करते नहीं है सिर्फ इधर उधर चलते रहते है और गलत राह पर जा रहे है कृपया आप मेरे पैर ठीक कर दो में संसार के सभी जगह पर जाऊंगा, भाग-दौर करूंगा और अच्छा काम करूँगा एक अच्छा राह अपनाऊंगा" क्या में उस भिखारी को तुम्हारा पैर दे दू? तब आदमी डर के मारे बोला नहीं प्रभु नही। भगवान और बोले जानते हो थोरी दूर पर जो बाज़ार है, वहा एक अंधा और एक बहरा भिखारी जो बोल भी नहीं पाते है वो दोनों हमेशा मुझसे मांगते रहते है की "प्रभु आपने इन सबको आखे दिए है लिकिन यह लोग कुछ अच्छा देखने के लिए अच्छा काम नहीं करते और तो और आपको एक बार देखने के लिए भी इनके पास समय नहीं रहता दिन भर गलत चीज़े ही देखते रहते है, दिन भर गली देते रहते है, लोगो का बुरा करते रहते है, दुसरो की क्षति करते रहते है, हमको आँखे और जवान देदो प्रभु हम आपको देखना चाहते है, आपका भजन गाना चाहते है, संसार की और गरीबो की भलाई करना चाहते है, लोगोको अच्छे उपदेश देना चाहते है"। भगवान् तब बोले क्या तुम्हारी जवान और आखे देदु उनको? तब वो आदमी डरके मारे काँपते हुए बोला नहीं प्रभु ऐसा अनर्थ मत करना।

भगवान और बोलते रहे... रेल के पटरी के पास एक और भिखारी बैठा हुआ है जिसका एक हाथ नहीं है और मानसिक रूप से दुर्बल है। वो हमेशा मुझसे बोलता रहता है की "प्रभु लोग अच्छा और स्वस्थ दिमाग रहने के बावजूद कुछ अच्छा सोच नहीं पाते, हमेशा दुसरो की बुराई के बारे में सोचते रहते है, गलत आईडिया निकालते रहते है उन्नति और कामयाब बनने के लिए गलत बिजनेस चुनते रहते है, दो हाथ होने के बावजूद काम नहीं करके कैसे अमीर बना जाए इसके बारे में सोचते रहते है, काम करने के वक्त अलस बन जाते है, और जब करने के लिए जाते है तो समाज और दुसरो की क्षति करते रहते है, हे प्रभु आपने मुझे अच्छा दिमाग और हाथ क्यों नहीं दिए? में बहुत काम करना चाहता हु, में अच्छा काम करना चाहता हु, समाज और गरीबो की भलाई करना चाहता हु, में अमीर बनना चाहता हु। तब भगवान बोले क्या में उस भिखारी को तुम्हारा हाथ और दिमाग दे दू?

तब फिरसे रोते हुए वो आदमी बोला नहीं प्रभु ऐसा कभी मत करना। मैं समझ गया प्रभु मैंने क्या गलती की है। प्रभु में और कभी शिकायत नहीं करूंगा, मैं हमेशा अच्छा काम करूंगा, समाज और लोगो के भलाई के लिए काम करूंगा, एक अच्छा राह अपनाऊंगा और लोगो से हमेशा अच्छा ब्यवहार करूंगा। भगवान फिर बोले सुनो तुम जो मुझे प्रशाद के रूप में लड्डू, मिठाई, फल चढ़ाते रहते हो कभी मुझे वो खाते देखा है? संसार के करोड़ो लोग मुझे इतना सारा फल, दूध, मिठाई चढ़ाते रहते है, में कितना खाऊंगा बोलो तो? मेरा तो एक ही पेट है, और इतने सारे फल और भोग कैसे खा पाऊंगा? इतना सब कुछ मुझे नहीं चाहिए इतना सारा दूध जो नष्ट होता है चढ़ावे के नाम पर, यह अगर गरीबो में बाट दिया जाता तो मुझे ज्यादा ख़ुशी होती। में तो थोड़े से ही संतुष्ट हो जाता हु। महनत की कमाई से अगर थोड़ी सी चीनी भी मुझे दे दो तो में तृप्त हो जाता हु।

भगवान और बोलते रहे....जानते हो तुम जब मेरे सामने जाकर प्रार्थना करते हो और मन ही मन में बर-बर करते रहते हो, इतना सब कुछ बोल लेते हो जो तुम खुद ही नहीं सुन पाते हो। एक भवरे की तरह ही गुण-गुण करते रहते हो। तुम जब ऐसे बर-बर करते रहते हो तब कडोरो लोग एक साथ ऐसे ही करते रहते है। मुझे तब एक फसे हुए टेप रिकॉर्डर की तरह ही सुनाई देता है पुर-पुर पुर-पुर........। तुम्हे जब गाली देना होता है तब तुम्हारी आवाज मइक की तरह बजने लगती है और जब प्रार्थना करने लगते हो तब तुम्हारी आवाज कहा चली जाती है? जो प्रार्थना तुम खुद सुन नहीं पाते हो वो में कैसे सुन सकता हु? मैं जब सुनूंगा तभी तो दूंगा।

तब वो आदमी प्रणाम करते हुए बोलने लगा, प्रभु मुझे क्षमा कर दो, मुझे अपनी गलती का अहसास हो गया है, आगे से मैं ऐसा कभी नहीं करूंगा। बहुत परिश्रम करूंगा, कभी गलत नहीं सोचूंगा, कभी शिकायत नहीं करूंगा, कभी गलत राह पर नहीं चलूंगा, लोगो के हित में काम करूंगा, अपने परिवार के सभी इच्छाओ को पूरा करूंगा, खुश रहूंगा

और दुसरो को भी खुश रखूंगा। हे प्रभु मुझे इस अंधकार से उजाले में लाने के लिए आपका कोटि कोटि धन्यबाद। भगवान तब वहा से चले गयह। उसी दिन से वो आदमी परिश्रम करने लगा। दुसरो को भी सहायता करने लगा। हमेशा खुश रहने की कौशिश करने लगा। कभी भी शिकायत नहीं करता। और देखते ही देखते एक दिन वो बहुत बड़ा और अमीर आदमी बन गया।

"जितना बढ़ा ज्ञान
उतनी बढ़ी सफलता"

आकर्षण

हमें इस दुनिया में जो कुछ भी मिलता है वो सिर्फ आकर्षण के सिद्धांत के कारण ही होता है। जब किसी के जीवन में कोइ ऐसी घटना होती है जो वो नहीं चाहता था, तब वो अपने भाग्य को ही दोष देता रहता है। लेकिन असल में ऐसा नहीं है। यह आपके भाग्य का दोष नहीं है। यह आकर्षण के कारण हुआ था। सुनने में अजीब सा लगता है, हे ना? असल में यही सच है। **लोग जो चीज़ नहीं चाहते है, ज्यादातर उसी को लेकर ही सोचते रहते है।** अब आप यह बोलेंगे बिलकुल नहीं। लेकिन आप ऐसा ही करते है। एक उदाहरण के साथ समझाता हु। आपने किसी से प्यार किया है और उससे शादी करना चाहते है। लेकिन वहा एक दिक्कत है की आप जिससे प्यार करते है उसके घरवाले इस रिश्ते के बिलकुल खिलाफ है। उसके भाई, बहन, माँ, बाप और चाचा कोई भी हो सकता है जो आपके इस

रिश्ते को तोड़ने के लिए हर तरह प्रयास कर रहा है। अब, जब आप अपने प्यार के बारे में सोचते है तब झटसे यह खयाल आता है की कोई आपके और आपके प्यार के बीच बाधा ढाल रहा है। और सोचने लगते है की आगे बहुत लफड़ा होने वाला है। बहुत झगरा और मारपीट होने वाला है। और एक दिन ऐसा ही होता है। तब आप यह बोलते है मैंने जैसा सोचा था वैसा ही हुआ। इसका कारण है निगेटिव आकर्षण। आप जब कुछ पोसिटिव सोचते है तब झट से उसका निगेटिव दिमाग में आ जाता है और आप उसको और ज्यादा सोचने लगते है। और आपका वही निगेटिव सोच उर्जा के रूप में ब्रम्हांड में चारो तरफ फ़ैल जाती है और प्रकृति वही आपके सामने ला देती है। यह एक बैज्ञानिक पद्धति से होता है। मैं फिर से बोल रहा हु की हम जो भी सोचते है वो चाहे पॉजिटिव या निगेटिव हो सकता है वो उर्जा के रूप में प्रकृति के चारो तरफ फ़ैल जाती है और प्रकृति उसको आपके सामने पेश कर देती है। यही है आकर्षण का सिद्धांत। आकर्षण का सिद्धांत हमेशा यह बोलता है की आप जो चीज़ चाहेंगे वो आप पाएंगे। इसलिए आपको आज से शुरू करना है अच्छा सोचना। जो आप चाहते है उसके बारे में सोचिये। धन, संपत्ति, गाड़ी, प्यार, ख़ुशी, दोस्त और स्वास्थ जो भी है इसके बारे में सोचिये की आपके पास आ रहा है। अगर कोई समस्या है तो उस समस्या से क्या अच्छा होने वाला है वही सोचिये। फिर भी समस्या का सोच बार बार आपके मन में आती है तो जोर जोर से बोलिए "यह मेरे लिए नहीं है" "यह मेरे लिए नहीं है" "यह मेरे लिए नहीं है"। अच्छी-अच्छी बाते सोचिये आपका अच्छा होगा। आप अगर पैसे की समस्या से जुंझ रहे है तो आप यह बोलिए "मेरी सारी समस्यायह ख़तम हो गयी है"। "अब में बहुत खुश हु"। "अब में बहुत खुश हु", "अब में बहुत खुश हु"। और काम पर लग जाइयह।

आकर्षण का सिद्धांत को और भी सरल पद्धति से आप इस्तमाल करना शुरू कीजिये। आप अपने जीवन में जो कुछ भी चाहते है उसका एक लिस्ट बनाइयह और एक सादे कागज पर लिख डालिए। उसका चार से पांच कोपी करके घर के दीवारों पर लगा दीजिये और हर दिन उसे देखकर बोलिए "यह सिर्फ मेरा है" "यह मेरा है" "यह मेरा है" "यह मेरा है"। मन में बिस्वास के साथ हर दिन देखियह और बोलते रहियह। आकर्षण के सिद्धांत को और भी तेज़ करने के लिए उस लिस्ट के हर चीज़ पर एक तारीख ढाल दीजिये जिसके भीतर आपको वो चाहिए। ऐसा करने से आपको वो चीज़े पाने के लिए जो काम करना होगा उसकी गति बढ़ जाएगी और प्रकृति और भगवान आपको वो पाने में सहायता करेंगे। याद रखिये जब आप ऐसा करते है तब भगवान आपको अवसर देते रहेंगे, हर बार आपको वो अवसर पहचानना है। जब भी आपके पास कोई अवसर आए तब यह सोचिये क्या यही वो तो नहीं जो इन चीजों को पाने के लिए आपकी सहायता करेंगी? अगर ऐसा हो तो आप उसको ज़रूर कीजिये। याद रखिये ईमानदारी से। यह भी याद रखिये की आपके

जो भी सपने है वो हमेशा वास्ताबिक और अच्छा होना चाहिए। तभी आप अपने लक्ष तक पहुच पाएंगे।

आकर्षण के सिद्धांत को इस्तमाल करके लाखो-कड़ोरो लोगो ने जो चाहा वो पाया है। हमारे जीवन में जो भी अच्छा या बुरा घट रहा है, वो आकर्षण के सिद्धांत के कारण ही हो रहा है। इसी आकर्षण के सिद्धांत को मानके बहुत सारे बुद्धिजीवी लोग अमीर बन पाए है। आप जब कुछ सोचते है तब उसका 90 प्रतिशत काम हो जाता है बाकि के 10 प्रतिशत काम आपको पूरा करना है। हमारे चारो तरफ आज जो कुछ भी है चाहे वो घर, गाड़ी, हवाई जहाज, रोकेट, बन्दुक, ट्रेन, टीबी, फ्रिज, फेन, कूलर, लाइट, कपडा, आपका पर्स, आपकी घरी, आपके जूते, आपका मोबाइल वगेरा वगेरा यह सब आकर्षण के सिद्धांत के कारण ही हुआ है। किसीने इन सब को चाहा है इसलिए यह वास्ताबिक रूप से हमे नज़र आ रही है। और अब हम इन सब चीजों को भोग रहे है। है की नहीं?

आकर्षण के सिद्धांत को और भी अच्छी तरह से समझने के लिए आप "रहस्य" "The Secret" नामक किताब को जरुर पढ़िएगा। यह एक ऐसी किताब है जो आपको बहुत अच्छी तरह से आकर्षण के सिद्धांत को समझाएगा। इस चमत्कारी किताब को पढ़के लाखो लोग उपकृत हुए है। इस किताब में आपको आकर्षण क्या करता है और किस तरह आकर्षण करना है जिससे आप अपने जीवन में जो चाहेंगे वो पाएंगे इसके बारे में सुन्दर और बिस्तृत तरीके से लिखा हुआ है। लेखिका रोहंडा ब्रेन ने बहुत सारे सफल ब्यक्तियो के सफलता के बारे में बताया है। और इस किताब को पढ़के आप भी यह कला सीख जायेंगे।

"अज्ञानी आदमी हमेशा
भोकता रहता है"

प्यार

पहले खुदसे प्यार करे। अगर आप खुदसे प्यार नहीं करेंगे तो दुसरो को कैसे प्यार करेंगे। लोग क्या करते है दिन भर गलत चीजे खाते रहते है और अपने स्वास्थ को ख़राब करते रहते है। और एक दिन शारीर बीमारियों का घर बन जाता है। सबसे पहले आपको खुदसे प्यार करना पड़ेगा। इतना सुन्दर शारीर भगवान् ने आपको दिया है, जिसमे दो सुन्दर आखे, दो हाथ, दो कान, दो पैर, एक नाक और एक स्वस्थ दिमाग है। बहुत सारे लोगो को यह नसीब नहीं होता। आप बहुत भाग्यवान है। उसे क्यों ख़राब करते रहते है? आपने शारीर को देखियह और बोलिए "में सुन्दर हु", "में स्वस्थ हु", "मैं गलत चीज़े नहीं खाता हु", "मैं अपने स्वास्थ को ख़राब नहीं करता हु"। हर रोज यह बोलिए और अपने स्वास्थ को अच्छा और बहतर करने का प्रयास कीजिये। अगर आप किसी नशे के शिकार है, तब भी नशा आपसे दूर चला जायेगा ऐसा अगर रोज बोलते है तो। कुछ लोग एसे होते है जो नशा करते है लेकिन दिलके बहुत अच्छे होते है। यह लोग लोगो की मदत करते रहते है। दुसरो की प्रसंशा करते रहते है, हमेशा अच्छी अच्छी बाते करते रहते है, किसीका बुरा नहीं चाहते। यह सब अच्छी चीज़े करते रहते है। फिर भी अपने आप से प्यार नहीं करते है। दुसरो के साथ अच्छा करके अपने साथ बुरा ब्यवहार करना भी एक बुरी आदत है। इसे सुधारना होगा। इन लोगोको पता नहीं होता की उनके अन्दर भी भगवान रहते है। अगर पता होता तो ऐसा नहीं करते।

जब कोई ब्यक्ति अपने आप को चोट पहुँचता है, तब उसके अन्दर बसा भगवान को भी कष्ट पहुँचता है। अन्दर का भगवान जब दुखी होगा तो आप कैसे सुखी रहेंगे? इसलिए सबसे पहले अपने आप से प्यार कीजिये। आपने आपको अच्छा और स्वस्थ रखने की कौशिश कीजिये। आप जब स्वस्थ और अच्छा रहेंगे तब आप ज्यादा से ज्यादा धन कमा पाएंगे और अमीर बन पाएंगे।

अपने काम से प्यार कीजिये। आप जो काम कर रहे हो उसे प्यार करना शुरू कर दीजिये। आप जो काम कर रहे हो उसे करने में आपको अगर अच्छा नहीं लग रहा है सिर्फ अपने और अपने परिवार की जरूरते पूरा करने के लिए कर रहे है, फिर भी उसकी श्रध्दा कीजिये। क्युकी वो काम आपको खाना दे रहा है और अपने काम के प्रति इमानदार रहियह। अच्छी तरह से काम को करने की कौशिश कीजिये। और उसके साथ ही कोई ऐसा काम करिए जो आपको अच्छा लगता हो। जिस काम को करने में आपको मजा आता हो और अच्छा लगता हो। क्युकी जो काम प्यार और मजे से किया जाता है उसी काम को करने से ही अमीर बना जा सकता है। अगर आपको अमीर बनने की इच्छा है तो आप ऐसा कीजिये। आपके अन्दर कोई न कोई तो ऐसा काम होगा जिसको करने के लिए कभी न

कभी आपने सोचा था। जिसके बारे में सोचते ही आप अच्छा महसूस करने लगते है। सोचिये वो क्या था? उसको अन्दर से खोज निकालिए और काम पर लग जाइयह। जरुरत पूरा करने के लिए जो काम कर रहे है उसे झट से नहीं छोड़ना है। आपके पसंद के काम को करते करते अच्छा इनकम हो रहा हो और जब आपको लगे की आपके पसंदिता काम को करने से आपकी खुदकी और अपने परिवार की जरूरते पूरा हो सकता है तब आप छोड़ने की सोचिये। अगर आपने पहले से ही अपने पसंदिता काम करके अमीर बनूंगा यह सोचके जो काम कर रहे है उसे छोर देते है, तो इससे बड़ा मुर्खता और कुछ नहीं हो सकता। क्युकी आप जो काम करना पसंद करते है उसे करने के लिए पहले काफी कठिनाइयों का सामना करना पर सकता है और आपको पैसो की भी तंगी हो सकती है। इसलिए आपको कही और से आर्थिक बेक-अप मिलनी चाहिए, आपके परिवार को चलाने के लिए।

इस संसार में मनुष्य, पशु, पक्षी और सभी तरह के जीव भगवान ने बनाया है एक दुसरो से प्यार करने के लिए। अगर आप इन सबसे प्यार नहीं करेंगे तो भगवान आपको कैसे प्यार करेंगे? एक कहावत है **"जीव से जो प्रेम करता है वही भगवान को पाता है"**। इसलिए सबसे प्यार करना सीखिए। प्यार करने में क्या जाता है बस दुसरो से अच्छी तरह से बाते करना, दुसरो के बारे मे अच्छा सोचना, दुसरो के अच्छे गुणों को देखना यही तो करना है। क्या यह मुश्किल है? ध्यान रखिये इन सब छोटी छोटी चीजों को परहेज़ करने के कारण लोग दुखी होते है। आप ऐसा मत कीजियेगा। आज से और अभी से यह शुरुआत कर लीजियह। आपके बुरे दिन अच्छे दिन में परिवर्तन होने लग जायेंगे। आप भी अमीर बन जायेंगे।

“परिबर्तन को स्वीकार करना ही सफलता के पथ पर चलना है”

कर्म

कर्म यानि काम करना ही चाहिए। पहले बताए गए बातो को अनुसरण करने के बाद अगर आप भगवान् पर बिस्वास करके बैठ गए की भगवान आपको अमीर बना देगा तो आप गलत है। आपको भगवान पर बिस्वास करना भी है, लोगे से प्यार करना भी है, आकर्षण का सिद्धांत भी इस्तमाल करना है और साथ में काम भी करना है। काम के बिना सफलता नहीं मिलती। जितने भी सारे अमीर और सफल ब्यक्ति है वो रातो रात अमीर नहीं बने है काम और परिश्रम करके ही बने है। शयद ही ऐसा कोई आदमी दिखाई देगा जो लोटरी से पैसा जितने के बाद अमीर बना हो। अगर ऐसा कोई है तो वो फिर से गरीब बन सकता है। क्युकी उसको उन पैसो का सही इस्तमाल कैसे करना है इसका कोई ज्ञान नहीं होता। परिश्रम और काम करके अमीर बना ब्यक्ति अगर गरीब बन भी जाये तो वो दुबारा अमीर बन सकता है। क्युकी उसे पता होता है की कैसे पैसा कमाया जाता है और उसे कैसे सुरक्षित रखा जाता है या फिर कैसे निवेश किया जाता है। इसलिए काम करना बहुत जरुरी है।

काम कोई भी छोटा या बड़ा नहीं होता। काम काम होता है। कुछ लोग एसे सोचते है की पिताजी अच्छी नौकरी करते है तो मैं छोटा काम नहीं कर सकता। पहले आप काम करना सीखिए बाद में उसे बड़ा करना सीखिए। अगर आप छोटा काम नहीं करूंगा बोलके रह गए तो आप अपना समय बर्बाद कर रहे है। समय किसीका इंतज़ार नहीं करता। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए. पी. जे. अब्दुल कलाम भी पहले पत्रिका बेचते थे जो बाद में बैज्ञानिक बने। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी पहले चाय बेचते थे। धीरुभाई अम्बानी भी पहले पेट्रोल पंप पर नौकरी करते थे। अभिनेता अक्षय कुमार भी पहले होटल में नौकरी करते थे। एसे लाखो उदहारण है इस दुनिया में। इसलिए बस काम को काम ही समझना

चाहिए। उसकी पूजा करनी चाहिए। जिस काम से आपको पैसा मिलता है उसकी इज़्ज़त करनी चाहिए।

दो इंजिनियर दोस्त अच्छी कंपनी में नौकरी करते थे। बहुत दिनों से कुछ अलग करने के बारे में सोच रहे थे। खुदका बिजनेस करना चाहते थे। और एक दिन ऐसा आया दोनों ने तय कर लिया और नौकरी छोड़दी। उनके घरवाले परेशान हो गए। उनके माँ बाप सोच रहे थे क्या होगा इनका इनती अच्छी खासी नौकरी छोड़दी। अब क्या करेंगे? बाद में पता चला की वो दोनों चाय की दुकान खोलना चाहते है। उनके माता-पिता आग बबूला हो गए। लाखो रूपया खर्चा किया पढ़ने के लिए और अब चाय बेचने लगे। दोनों ने चाय की दुकान लगाई और होम डिलीवरी करने लगे। यह एक अनोखा तकनीक था चाय बेचने का। कुछ महीनो के बाद काम अच्छा चलने लगा और एक और दुकान खोल दिया एक और शहर में। ऐसा करते करते अब उनके दस दुकान हो गए है और बहुत अच्छी तरह से इनकम भी होने लगी है। अब तो वो लोग अपना ब्रांच भी देने लगे है।

काम कोई भी हो बस उसको करने का नजरिया अलग होना चाहिए। स्मार्ट वर्क जिसे कहते है। अगर आप स्मार्ट वर्क करते है तो आपका छोटा सा काम भी बहुत बड़ा बन सकता है।

एक गाव में एक गरीब घर की छोटी सी लड़की जिसे तरभुज बहुत पसंद था। एक दिन उसने अपने पिताजी से पैसे मांगे तरभुज खरीदने के लिए। पिताजी के पास पैसे कम थे पर लड़की ना मानी और जीद करने लगी। उसके पिताजी ने अपने पॉकेट से 10 रूपया दिया उसको तसल्ली देने के लिए। और वो छोटी सी बच्ची इसी में खुश होकोर तरभुज़ खरीदने के लिए तरभुज वाले के पास गयी। तरभुज वाला अपने खुद के खेत पर तरभुज उगाता था और बेचता था। दुकान पर बहुत सारे तरभुज थे। लड़की दूकानदार से पूछने लगी “चाचा यह बड़ा सा तरभुज कितने का है? 100 रूपया बेटी। थोड़ा छोटा सा तरभुज की तरफ इशारा करके फिर पूछने लगी “यह कितने का है चाचा?” 60 रूपया। ऐसा करते करते सभी का कीमत पूछ लिया लेकिन कोई 50 रुपयह से कम का तरभुज नहीं मिला। अब वो लड़की सोच में पर गयी। उसके पास तो सिर्फ 10 रूपया है। उसने थोड़ा सा सोचा और दूकान से बहार निकलकर तरभुज के खेतो पर देखने लगी। एक छोटा सा तरभुज पैर पर लगा हुआ था। फिर उसने दुकानदार को बुलाया “चाचा वो छोटा वाला तरभुज कितने का है”? दुकानदार समझ गया उसके पास 10 रूपया है। उसे बुरा लगा और वो छोटा सा तरभुज उस लड़की को देने के लिए बोला “बेटी यह 10 रूपये में मिल जायेगा”। बच्ची बहुत खुश हो गई और उसने 10 रूपया का नोट उस दूकानदार को दिया और बोली “चाचा यह तरभुज मेरा हुआ इसे में एक महीने बाद ले जाउंगी”। दूकानदार हेरान रह गया! छोटी सी बच्ची की समझ को देखकर वो मुस्कुराने लगा।

इन दोनों कहानी में आपको थोडा बहुत स्मार्ट वर्क के बारे में समझ आ गया होगा। आपको भी इसी तरह स्मार्ट वर्क करना है। काम कोई भी हो आप बस अपना दिमाग लगाइए। पहले वाले कहानी में आपको यह समझाना चाहा की, छोटे से छोटा काम को भी बड़ा बनाया जा सकता है innovation और power of duplication की मदत से। और दूसरी कहानी में आपको यह समझाना चाहा, की कुछ ऐसा काम करो की आज करते हो तो बाद में आपको बहुत ज्यादा फल मिले। काम कीजिये और अपना दिमाग लगाइए। एक दिन आप भी अमीर बन जायेंगे। आप जरुर सफल बन जायेंगे।

"कर्म से अपनी पहचान बनाओ"

कृतज्ञता

आपने इस किताब के पहले ही पंक्ति में कृतज्ञता शब्द देखा ही होगा। आप ऊपर बतायह हुए सभी काम करने के बावजूत आप सफल नहीं हो पाएंगे, अगर आपके पास कृतज्ञता नहीं हो तो। कृतज्ञता एक ऐसी चीज़ है जो आपको सफलता के मार्ग पर बिना किसी रोक टोक ले जाता है। इंसान हमेशा एक गलती करता है जिससे की वो अमीर नहीं बन पाता। जिसने उसके ऊपर अहसान किया है वो उसको भूल जाता है। यह बहुत बड़ी गलती है। आपको जो ख़ुशी, दौलोत, मदत मिला उसे अगर आप भूल जाते है तो आप आगे नहीं बढ़ पाएंगे और आगे आपको मिलेगा भी नहीं। जहा है वही रह जायेंगे।

कृतज्ञ बने। हमेशा धन्यबाद करे भगवान् को, यह जीवन देने के लिए। जिसने आपकी मदत की उसको। जो आपको कमाके दे रहा है उसको। जो आपको तनख्वाह दे रहा है उसको। जो आपको काम दे रहा है उसको। जो आपको ख़ुशी दे रहा है उसको। जो आपको प्यार दे रहा है उसको। जो आपको ज्ञान दे रहा है उसको। जो आपको खाना दे रहा है उसको। जो आपसे सामान खरीद रहा है उसको। आपको और आपके परिवार को खाना पेट तक पहुचाने के लिए जिसने महनत की है उनको। पृथ्वी, चन्द्र, सूरज, हवा, पानी, आग और प्रकृति सभी को आप धन्यबाद कीजिये। यह तो मैंने बोला है आपके जीवन में ऐसे बहुत सारी लिस्ट होंगी जिनको आप एक कागज पर लिख डालिए और अपने दिवार पर लगा दीजिये। हर दिन एक एक बार उसे देखियह और धन्यबाद दीजिये। दिवार पर लगाने का यह मतलब हे की आप कभी अपने ब्यस्त जीवन में उनको भूल न जाये। किसी नोट बुक पर लिख लेंगे तो हर दिन आप वो नोट बुक निकालना और उसे देखना भूल जायेंगे। अलसता के कारण आपको याद रहेगा फिर भी निकाल नहीं पाएंगे। और आपके जीवन में वो लिस्ट इतनी ज्यादा लम्बी है की आप उसे याद रख भी नहीं पाएंगे। एक बार कलम से लिखना तो शुरू कर दीजिये। इस लिस्ट को लिखने में आपको कम से कम एक हफ्ता लगना चाहिए। आराम से और ध्यान से सोचके लिखिए। और हर दिन एक और चीज़ याद आया तो उस लिस्ट में जोड़ते जाइयह।

जब आपके अन्दर कृतज्ञता आ जाती है तब आप बिनम्र हो जाते है। अच्छे स्वभाव के बन जाते है। किसीसे भी बुरा बरताव नहीं करेंगे। वो बोलोते है ना "सुन्दर और शुशील" एसे ही आप बन जायेंगे। अच्छाई हमेशा अच्छाई को खीचने लगता है। आप अच्छा सोचने लग जाते है, तो आपके जीवन में अच्छा होने लगता है। आप दुसरो को धन्यबाद देने लग जाते है तो दुसरो के जीवन में अच्छा वक़्त शुरू हो जाता है। फिर वो भी आपको धन्यबाद देना शुरू कर देंगे और आपके जीवन में भी अच्छा वक़्त आने लग जायेंगे। कृतज्ञता से धन, संपत्ति, ख़ुशी, मन की शांति और सेवा का भाव तो आता ही है साथ में बीमारियों से भी छुटकारा मिलता है। कृतज्ञता से बिमारिया भी दूर भागती है। बीमारी यानि बुरा वक़्त वो

आपसे हमेशा दूर रहता है। ऐसा बहुत सारे लोग बोलते है। जिन्होंने इसे अपने जीवन में इस्तमाल किया है। कृतज्ञ बनिए और अमीर बन जाइयह। आपको सब कुछ मिलेगा आप सफल बनेंगे।

एक गांव में बाबूलाल नाम का एक किसान रहता था। उसके पास एक दूध देने वाली गाय थी और एक एकर ज़मीन थी जहा वो खेती करता था। खेत के चावल को वो लोग खाते थे और दूध को बेचकर आपने और अपने परिवार को चला रहा था। बाबूलाल हमेशा खुश रहता था और हमेशा जो मिलता उससे ख़ुशी ख़ुशी अपने परिवार को चलाता था। बाबूलाल अपने पास जो है उसके लिए हमेशा भगवान् को धन्यबाद देता था। बाबूलाल अपने गाय धन्नो से बहूत ज्यादा प्यार करता था।

उसी गांव में दो और किसान और थे जिनके पास तीन चार गाय थी और काफी जमीन थी। वो दोनों उसके दोस्त थे। लेकिन दोनों ही बाबूलाल से जलते थे। क्युकी बाबूलाल हमेशा खुश रहता था। वो लोग सोचते थे की इतनी कम जमीन और इतना काम कमाई होने के बावजूत वो इतना ज्यादा खुश कैसे रहता था। हमारे पास इतनी जमीन और दूध देने वाली गाय है फिर भी हमारे जीवन में इतनी ख़ुशी नहीं है लेकिन यह इतना खुश कैसे रहता है। और बाबूलाल को हमेशा तकलीफ देने की कौशिश करते रहते थे।

दोनों हमेशा बाबूलाल को गाय बेचने के लिए बोलते और कही और जाकर नौकरी करने के लिए बोलते। पर बाबूलाल उनकी बात नहीं मानता और बोलता की मेरे पास जो है उससे में अपने परिवार को अच्छी तरह से चला पता हु। इसलिए मुझे कही जाने की जरुरत नहीं है।

एक दिन दोनों दोस्तों ने ठान लिया की बाबूलाल को उसके दूध दने वाली गाय को बिकवाना ही है। रात के समय बाबूलाल के खेत पर दोनों गए और खेत को आग लगा डाला।

गांव वालों ने आग देखते ही बाबूलाल को बुलाकर ले गए। और देखते ही देखते पूरा खेत आग के चपेट में आ गया। बाबूलाल बहुत रोया और दुखी रहने लगा। उसके दोनों दोस्त बाबूलाल को उनको 2000 रूपये में गाय बेचने के लिए बोले। पर बाबूलाल नहीं माना क्युकी वो धन्नो से बहुत ज्यादा प्यार करता था।

देखते ही देखते घर का राशन ख़तम हो गया। उसके पास अब घर में खाने के लिए सामान नहीं था। उसकी पत्नी ने उसे गाय को बाजार में बेचने की सलाह दी जिससे कुछ ज्यादा पैसे मिल जायेंगे और बाबूलाल मान गया।

अगले दिन सुबह बाबूलाल अपने धन्नो को लेकर बाजार के लिए रवाना हो गया। गांव से बाजार जाने में एक दिन का समय लगता है। बाबूलाल ने रस्ते में खर्च करने के लिए कुछ सिक्के लिए जो एक पोटली में बांध कर धन्नो के गले में बांध दिया।

शाम होने को आयी बाबूलाल को भूख लग रही थी। बाजार पहुंचने से पहले एक होटल के सामने धन्नो को बांध दिया और खाना खाने के लिए होटल के अंदर चला गया। कुछ ही समय बाद होटल का मालिक आ रहा था। उसने देखा की उसके होटल के सामने एक गाय बंधी हुई है। और अचानक गौर से देखा तो उसके गले से सिक्के गिर रहे थे। होटल का मालिक चौक गया। सोचने लगा यह तो चमत्कारी गाय है, जो अपने गले से सिक्के गिरती है। यह अगर मुझे मिल जाये तो में अमीर बन जाऊंगा।

होटल के अंदर जाते ही पूछने लगा "यह गाय किसका है"? बाबूलाल दौरके आया। मालिक यह मेरा गाय है। मालिक पूछने लगा इसे कहा ले जा रहे हो। बाबूलाल बोला "मालिक इसे बाजार में बेचने के लिए ले जा रहा हु"।

होटल का मालिक यह सुनते ही बहुत खुश हुआ। वो सोचने लगा की इसे पता नहीं है की यह एक चमत्कारी गए है जो गले से सिक्के गिरती है। और बोलै की "तुम्हे इसे बाजार में ले जाने की ज़रूरत नहीं है में तुम्हारे गाय को खरीदना चाहता हु और इसके लिए तुम्हे बीस हजार रुपया दूंगा"।

बाबूलाल चौक गया कुछ समय चुप रहा और फिर होटल का मालिक बोला अगर कम लग रहा है तो में तुम्हे पच्चीस हजार रुपया दूंगा। बाबूलाल ने मन ही मन सोचा की शायद यही भगवान् की मर्जी है और वो मान गया।

लौटते समय बाबूलाल उस पैसो से दो और गाय खरीदकर ले आया और उसके साथ कुछ मुर्गिया भी।

बाबूलाल की पत्नी इस बात को सुनकर बहुत खुश हुई। बचे हुए पैसो से घर का राशन ले आया और अपने खेत को फिर से जोत लिया। बाबूलाल इसके लिए भगवान् को धन्यबाद देने लगा।

गाओ के दोनों किसान फिर से चौक गए। वो सोचने लगे की खेत जलने से तो यह पहले से ही ज्यादा अमीर बन गया। और ज्यादा खुश रहने लगा। वो दोनों सोच में रह गए।

दोस्तों कृतज्ञ होने से आप और ज्यादा खुश रह सकते है। आपने देखा की बाबूलाल इस कृतज्ञता से कैसे अमीर बना। आपको भी आपके जीवन में जो है उसके लिए

कृतज्ञ होना है। हमेशा भगवान् को धन्यबाद देना है और जो खा-पी रहे है उसके लिए भी।

कृतज्ञ आदमी ही हमेशा खुश रह सकता है और अमीर बन सकता है। अगर आप कृतज्ञ है और आपके जीवन में कुछ बुरा हो रहा है तो समझिये की इससे भी अच्छा कुछ आपके जीवन में होने वाला है। इसलिए हमेशा कृतज्ञ रहे।

दुनिया के जितने भी सारे लोग अमीर और सफल बने है उन सबमे यह गुण है। इसलिए आप भी इसे अपनाइए और अमीर और सफल बने।

"आपकी एक मुस्कान किसीको ख़ुशी दे सकती है"

दान

दान पुण्य का काम होता है। सभी जानते है पर कितने लोग करते है? क्या आप दान करते है? आचार्य चाणक्य ने कहा था **"दान से इंसान का बुरा समय टल जाता है"**। यह बिलकुल सच है। आपने बहुत सारे लोगो के बारे में सुना होगा दान करते हुए। कुछ लोग भगवान को चढ़ावे के रूप में दान करते है। कुछ लोग गरीब, बेसहारा लोगो को दान करते है। आपको भी दान करना चाहिए। अगर आप आपना बुरा वक़्त ठीक करना चाहते है तो दान कीजिये। अपने कमाई का एक हिस्सा हर महीने गरीब और बेसहारा लोगो को दान में दीजिये। चाहे आप कम कमाते है फिर भी उसका एक हिस्सा दान के लिए इस्तमाल

करे। भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पि.जे. अब्दुल कलाम ने अपनी सारी कमाई दान कर दिया था। प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी हर महीने अपनी तनख्वा गरीब बच्चियों के लिए दान कर देते है। फेसबुक के मालिक मार्क जुकरबर्ग ने अपनी संपत्ति के 99 प्रतिशत दान कर दिया था। बड़ी बड़ी कंपनियों के मालिक हर साल अपने कमाई का एक हिस्सा दान कर देते है। ऐसे बहुत सारे उदाहरण है। आप कभी कभी यह सोचते होंगे की वो सब पागल हो गए है इसलिए ऐसा कर रहे है। वो सब पागल नहीं है। वो सब जानते है की अमीर बनने के लिए बुरे वक्त को ख़तम करना जरुरी होता है। अब कैसे दान करने से बुरा वक़्त ख़तम हो जाता है? जब आप किसीको दान करते है तब वो ब्यक्ति आपके लिए भगवान से प्रार्थना करने लगता है की आप सही सलामत रहे और सुखी रहे। बस यह हजारो लोगो की दुआ ही आपको मुसीबतों से दूर रखता है। इसका मतलब यह नहीं की आपके जीवन में बाधाएं नहीं आयेंगी। बाधाएं आयेंगी लेकिन आप उस बाधा को पार कर जायेंगे। किसीने सच ही कहा था "**भगवान आपके नाव पर बैठे है इसका मतलब यह नहीं की तूफान नहीं आएगी, इसका मतलब यह है की तूफान आयागा लेकिन आपके नाव को डूबा नहीं पाएगी**"।

बाधाएं आपके जीवन पर आ रही है इसका मतलब यह है की भगवान आपको और भी मजबूत बना रहा है। आप अगर बाधाओ से जुझ रहे है तो आप और ज्यादा मजबूत बन रहे है। अपने आपको और ज्यादा मजबूत बनाइयह और आगे बढ़ते रहियह। कभी यह मत सोचना की आप दान नहीं कर पाएंगे क्युकी आपके पास पर्याप्त पैसा नहीं है। आप बस सोचिये की आप कैसे दान कर सकते है आपको पैसा मिलना भी शुरू हो जायेगा।

कहते है "पानी" और "खाना" यह दो चीज़े दान करने से पुण्य मिलता है। में यह मानता हु की आप कुछ भी दान कीजिये बस मन से और ख़ुशी से दान करने से ही पुण्य मिलता है। आप किसीको दान कर रहे है इसका मतलब वो इंसान खुश हो रहा है। और उसके अन्दर बसा भगवान भी खुश हो रहा है। दान करते वक़्त कभी स्वार्थ मत देखियह। यह मत देखियह की दान कर रहे है तो आपको आशीर्वाद दे देगा। इस इच्छा से अगर आप दान करते है तो आपका दान बिफल हो जायेगा। हमेश निस्वार्थ दान करना चाहिए। दान में सेवा भी जुड़ा होता है। निस्वार्थ सेवा करना भी दान करने के समान होता है। किसी गरीब और दुखियारे की निस्वार्थ सेवा करना भी दान की तरह पुण्य का काम होता है। इसका मतलब यह नहीं की आप अपना काम-धंधा छोड़कर सेवा में लग जाओ। पहले काम और उस काम के बिच में एक समय निकालकर सेवा करना है। वो महीने में एक बार भी हो सकता है, या फिर हफ्ते में एक बार, या साल में एक बार।

दान का महत्व समझने के लिए में आपको एक किताव पढने की सलाह दूंगा "**दुनिया का महान सेल्समेन**" जिसको अग मेनडिनो ने लिखा है। यह किताव आप जरुर पढ़िएगा तब आप दान की महत्व को और भी अच्छी तरह से समझ पाएंगे।

“दुनिया में हर इंसान एक अभिनेता होता है”

कुछ ज्यादा करने की क्षमता

इंसान काफी समय सोचता है की वो क्यों इतना कम इनकम कर रहा है। यह आप भी हमेशा सोचते होंगे। लेकिन आज आपको बहुत कुछ जानने को मिलेगा। अगर आप हमेशा ऐसा सोच रहे है की आपके पास बोहुत सारा गुण और काबिलियत है और आप जो कमा रहे है वो उस हिसाब से बोहुत कम है तो मे आपको बतादु की आप गलत फैमि मे जी रहे है। इसान हमेशा वही कमाता है जितना उसका ज्ञान और काबिलियत है। प्रकृति कभी गलत नहीं हो सकती। क्युकी आम के पैर में आम ही उगेंगे अंगूर नही। अगर आप चाहते है की आपकी कमाई और ज्यादा बढ़े तो आपको अपने दिमाग को और ज्यादा खिलाना होगा। जितना आप सीखेंगे उतना ज्यादा आप कमा पाएंगे। आप यह मान लीजियह की आपकी जो इनकम है वह आपके कुछ खामियों के वजह से कम हो रहा है, या फिर है। अगर आप अपने आप पर काम करना शुरू कर देंगे तो आपकी इनकम आपने आप बढ़ने लगेगी। आप थोड़ा ध्यान से बैठियह और सोचिये की आपमें क्या खामिया है जिससे आपको बदलने की जरुरत है। ढूँढियह और उसपर काम करना शुरू कर दीजिये। शुरू शुरू में आपको शयद आपके मुताबिक फल न मिले। लेकिन आपको हिम्मत नहीं हारनी है और अपने बिस्वास को अटूट बनाके रखना है और आगे बढ़ना है। क्युकी फल एक दिन या एक महीने में नहीं पकरते कुछ कुछ फल दो साल में पकरते है, कुछ कुछ एक साल में और कुछ तो पाच साल में पकरते है। तो इसलिए थोड़ा सा धेर्य रखे और अपने आपको काबिल बनाने मे लग जाइयह आपको फल अबश्य मिलेगा।

सफलता आपको एक दिन में तो मिलने वाली है नहीं। लेकिन हां अगर आप लगातार अपने काम को हर रोज़ करते है और हर रोज़ थोड़ा ज्यादा करते है तो आप ज़रूर कामयाब बन जायेंगे। इसका मतलब मे नौकरी की बात नहीं कर रहा हु। क्युकी नौकरी आपको सिर्फ तनख्वा देता है और कभी कभी आप काम की वजह से कुछ और भी ज्यादा

कमा सकते है। लेकिन हां यह भी सच है की नौकरी करने वालो को भी यह बात लाघु होती है की जो ब्यक्ति अपने काम को यानी नौकरी के काम को थोड़ा ज्यादा करता है और अपना काबिलियत दिखाता है उसको ही जल्दी तरक्की मिलती है।

आप जो काम या ब्यवसाय कर रहे है उसे आप जो कमा रहे है उससे अगर थोड़ा ज्यादा कमाने की सोच रहे है तो आपको थोड़ा ज्यादा काम करना परेगा। अगर बहुत ज्यादा धन कमाना चाहते है तो आपको बहुत ज्यादा काम करना परेगा।

आप हर दिन जो काम करते है उससे थोड़ा ज्यादा काम करने की आदत ढालिए। हर दिन आपको थोढ़ा ज्यादा करना है। आज काम जब ख़तम हो जाये तब आप बोलिए और थोड़ा करना है। फिर कल जब आप काम करले और फिर से बोलिए और थोड़ा सा करना है। यह आदत आपको बेझिझक कामियाबी की तरफ ले जाएगी। काम जब ख़तम हो जायेगा तब आपका दिमाग बोलेगा बस बहुत कर लिया, लेकिन तब आपको अपने बुद्धि का इस्तमाल करना है और बोलना है थोड़ा और करते है। बस यह आदत अपने अन्दर वीकसित कर लीजिए। कामयाब लोगो के पास यही आदत होती है। वो काम ख़तम होने के बाद भी काम करते रहते है। जितना ज्यादा और थोड़ा करने की इच्छा रखेंगे उतनी जल्दी कामयाबी आपके पीछे दौड़ती चली आएगी।

आपको अपने दिमाग को यह करने के लिए तैयार करना होगा। यह एक दिन में नहीं होगा। अगर आपने सोचा की आज सबसे ज्यादा काम करूँगा और दिन रात लगे रहे तो आप बीमार पर जायेंगे और आपका शारीर और दिमाग अगले दिन से आपको जवाब देने लग जायेंगे। इसलिए इस काम को आप थोड़ा थोड़ा रोज़ करना शुरू कर दीजिये फिर देखिएगा यह एक आदत बन जाएगी और आप युही इसे करने लग जायेंगे। और यह आदत आपको कामयाबी की तरफ ले जाएगी और आप एक दिन सफल बन जायेंगे। आप ज़रूर कामयाब बन जायेंगे।

“सबसे बड़ा रोग क्या कहेंगे लोग”
संदीप महेश्वरी

<u>जो चाहो वो पाओ</u>

अजय हर रोज सुबह अपने काम पर जाता था। वो जिस रस्ते से गुजरता था उस रस्ते पर एक तालाब होता था। उस तालाब के पुल पर हर रोज एक साधू बैठता था। और जोर जोर से चिल्लाता था **“जो चाहो वो पाओ जो चाहो वो पाओ”**। रस्ते पर चलने वाले लोग उस साधू को पागल समझते थे और कोई उस साधू के पास नहीं जाता था। एक दिन अजय ने सोचा चलो आज समय भी है उस साधू से पूछ ही लेते है की वो जो कह रहा है क्या वह सच है? अजय उस साधू के पास गया और पूछने लगा “बाबा आप हर रोज यहाँ आके क्यों चिल्लाते है? आप जो बोल रहे है क्या वह सच है? “जो चाहो वो पाओ”। तब साधू ने बोला हां यह बिलकुल सच है। इंसान जो चाहेगा वह पा सकता है। अजय थोड़ा सा सोचने लगा “यह साधू सायद सचमे पागल है”। फिर वो पूछने लगा क्या में भी जो चाहूँगा वह पा सकूंगा? साधू बोला “हां बिलकुल पा सकोगे। मेरे पास दो अनमोल चीज़ है एक हीरा और एक मोती उसे अगर तुम्हे देदू तो तुम जो चाहोगे वह पा सकोगे”। अजय के मन में अब कुछ-कुछ होने लगा वो उस हीरा और मोती को पाना चाहता था। फिर साधू से पूछने लगा “बाबा क्या वह हीरा और मोती आप मुझे दे सकोगे? साधू बोला अगर तुम इसे सही इस्तमाल करने का वादा करते हो तो में तुम्हे दे दूंगा”। तब अजय उत्साह के साथ बोला, बाबा में आपके हीरे और मोती का सही इस्तमाल करने का वादा करता हु। साधू बोला ठीक है तो अब तुम अपने दोनों हाथ आगे करो में तुम्हे वह देने वाला हु। अजय ने अपने दोनों हाथ साधू के सामने फेलाए। साधू बाबा ने उसके पहले हाथ में अपना हाथ रखा और बोला “यह लो आज में दुनिया का सबसे अनमोल हिरा तुम्हे सोप रहा हु”। अजय ने अपना हाथ देखा वहा कुछ भी नहीं था, तो बोला बाबा यहाँ तो कुछ भी नहीं है। तब साधू बाबा बोले, मैंने तुम्हे जो हीरा दिया है वह देखा नहीं जाता। वह है “समय”। समय ही दुनिका का सबसे

मुल्याबान बस्तु है जिसे तुम कभी यु ही नहीं गवाना। हमेशा काम करते रहना। समय का हमेशा सही इस्तमाल करना सही ढंग से तब तुम जो चाहोगे वह पा सकोगे। इसी मुल्याबान बस्तु का इस्तमाल जिसने सही ढंग से किया है वही सफल बना है। तुम भी इसका सही इस्तमाल करके सफल बन सकते हो। अब दूसरा हाथ लाओ साधू बाबा बोले। अजय के दुसरे हाथ में अपना हाथ रखा और बोला यह है दुनिया का दूसरा अनमोल “मोती” जो में तुम्हे दे रहा हु और वह है “धैर्य”। अजय फिर पूछने लगा बाबा यह धैर्य कैसे मुल्याबान मोती है? तब बाबा बोले “धैर्य ही अनमोल मोती है”। जिसमे धैर्य है वही सफल बना है। जीवन में काम करते समय फल जब ना मिले तब धैर्य रखना है और काम करते जाना है। फल तुम्हे एक न एक दिन जरुर मिलेगा। अगर तुम्हे फल मिलते समय देर हो रहा है बोलके काम छोर दोगे तो तुम्हे कभी फल नहीं मिलेगा। कभी कभी फल मिलने में समय लगता है। जो इसे समझ पाया उसे फल अबश्य मिला और जो इसे समझ नहीं पाया उसे फल कभी नहीं मिला। जीवन के हर कठिनाइयों पर तुम्हे “धैर्य” रखना है और आगे बढ़ते रहना है। तब तुम सफल आदमी बन जाओगे और तुम जो चाहोगे हो पा सकोगे।

अजय को बात समझ आ गयी। उसने बाबाजी को प्रणाम किया और धन्याबाद करते हुए कहा बाबा आपने मुझे आज जो ज्ञान दिया वो मेरे जीवन की सबसे मुल्याबान चीज़ है। में आज समझ पाया की में इतने दिन क्यों अमीर नहीं बन पाया, आपने मेरी आखे खोलदी। आपका बहुत बहुत धन्यबाद।

उसी दीन से अजय महनत से काम करने लगा। समय का सही इस्तमाल करने लगा और “धैर्य” रखने लगा और आगे बढ़ता गया। देखते ही देखते कुछ साल बाद अजय अमीर आदमी बन गया।

दोस्तों आपको भी यह दो अनमोल “हीरे और मोती” यानि “समय और धैर्य” का सही ढंग से इस्तमाल करना है और आगे बढ़ते रहना है। याद रखिये जीवन में कठिनाइया आयेंगी, लेकिन आपको धैर्य रखना है। झट से हार नहीं मान लेना है। काम कर रहे है तो फल अबश्य मिलेगा। आप जरुर अमीर और सफल आदमी बन जायेंगे। आप कामयाब बन जायेंगे।

“मांगकर जीनेवाले हमेशा गरीब सोच वाले होते है”

ईगल बने

इगल की उम्र 70 साल होती है। लेकिन उसके जीवन में एक समय ऐसा आता है की उसे अपने जीवन का सबसे मुश्किल फैसला लेना परता है। 40 साल होते ही उसके पंख इतने भारी हो जाते है की वो उड़ नहीं सकता। उसके चोंच इतने टेढ़े हो जाते है की उस चोंच से वो कुछ भी खा नहीं सकता। साथ ही उसके नाख़ून भी टेढ़े हो जाते है की उस नाख़ून से वो कुछ भी पकर नहीं पाता। अब उसके सामने उसको मौत ही नज़र आती है। उस समय उसे अपने जीवन का सबसे मुश्किल और खतरनाक फैसला लेना परता है। उसे या तो मरना है या तो बचने के लिए संघर्ष करना है। तब वो बचने के लिए संघर्ष करने का फेसला करता है। यह बहुत मुश्किल फेसला है। इसके लिए उसे बहुत दर्द सहना परता है। तब वो पहाड़ के चोटी पर चला जाता है और सबसे पहले अपने चोंच को पत्थर पर मारकर तोड़ देता है। तब उसे बहुत दर्द होता है और बोहुत सारा खून भी बहने लगता है। वो उस दर्द को सहन कर लेता है। फिर वो अपने नाख़ून को पत्थर पर रगड़ रगड़ कर उसे भी तोड़ देता है और अब भी उसे बोहुत दर्द होता है और खून भी बहने लगता है। तब वो अपने चोंच और नाख़ून को दुबारा निकलने तक चुप चाप अपने घोसले पर बैठा इन्तेजार करता है। फिर जब उसके चोंच और नाख़ून लब्मे हो जाते है तो वो फिर से अपने भारी पंखो को खीचकर निकाल देता है। तब भी उसे बहुत दर्द होता है और खून भी बहता है। फिर से वो कुछ महीनो तक रुकता है और इन्तेजार करता है अपने पंख दुबारा निकलने तक। तक़रीबन यह मुश्किल सफ़र तय करने के लिए उसे 5 से 6 महीने लगता है। और उन दिनों वो काफी समय भूखा भी रहता है। फिर जब वो पूरी तरह से ठीक हो जाता है तब वो फिर से उड़ने लगता है और पहले जैसे शिकार भी करने लगता है। और बाकी की जिन्दगी वो फिर से पहले की तरह जीने लगता है।

दोस्तों हमारी जिन्दगी भी कुछ इस तरह की होती है। आपको भी इगल की तरह ही बनना है। जब आपको लगे की आपके जीवन में ऐसा ही मुश्किल दौर आ गया है की आप

आगे बढ़ नहीं पा रहे है। तब आपको तपस्या करना पड़ेगा। तपस्या का मतलब है की आपको सिखने के लिए थोड़ा सा रुकना पड़ेगा। जी हां आपको अपने आपको तैयार करना पड़ेगा। अपने आपको तैयार करने के लिए आप जो काम कर रहे है उसको सिखने के लिए समय बिताना होगा। अपने आपको आगे बढ़ाने के लिए आपके दिमाग को और भी अच्छी तरह से तेज़ करना पड़ेगा। कुछ समय शांत होकर आप सिखने के काम पर लग जाइयह। जितना ज्यादा सीखेंगे उतना ज्यादा आगे बढ़ पाएंगे। तब शायहद कुछ परिशानियो का सामना करना पर सकता है। आपको धैर्य के साथ वो काम करना है। देखते ही देखते आप अच्छी तरह से सीख जायेंगे और इगल की तरह फिर से उड़ने लगेंगे और अच्छी तरह शिकार कर पाएंगे। आप सफल बन जायेंगे। कामयाब बन पाएंगे।

"उठो जागो जब तक न तुम सफल हो
तब तक रुकना नहीं थकना नहीं"
स्वामी विवेकानन्द

<u>भगवान मुझे बचाएगा</u>

एक पुजारी था। जो गाव के एक मंदिर में पूजा करता था। वो भगवान पर बहुत बिश्वास करता था। श्रध्दा से हर दिन भगवान का पूजा करता था। गाव के लोग भी उसे बहुत मानते थे। एक दिन रेडिओ में एक खबर आई की मौसम बहुत ख़राब होने वाला है और गाँव में बाढ़ आने वाला है। सबको सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए बोला गया। गाँव के सभी लोग सुरक्षित जगह पर जाने लगे। कुछ गाँव वाले पुजारी के पास आया और पुजारी को भी साथ जाने के लिए बोले। तब पुजारी नहीं माना और बोला की "तुम लोग चले जाओ मेरा भगवान मेरी रक्षा करेगा"। गाँव में बारिश होने लगी और पानी बढ़ने लगा। कुछ गाव वाले तब बचे हुए थे और नाव लेकर सामान ले जा रहे थे। सबने पुजारी को बोला पुजारी जी आप हमारे साथ चलिए आपकी जान बच जाएगी। तब पुजारी बोला "मुर्ख इंसान मेरे साथ भगवान है मुझे कुछ नहीं होगा में बच जाऊंगा तुम सब चले जाओ"। सब लोग यह सुनकर चले गए। कुछ समय बाद पानी और ज्यादा बढ़ने लगा और मंदिर के अन्दर आने लगा। पुजारी भगवान को याद करते करते मंदिर के छद पर चढ़ गया और वहा भी भगवान को याद करने लगा और भगवान से बोलने लगा "प्रभु मुझे पता है आप मुझे बचा लोगे"। देखते ही देखते पानी और भी बढ़ने लगा। छद के ऊपर से एक हेलीकप्टर आया और पुजारी को बुलाने लगा। पुजारी जी हम सीडी गिरा रहे है आप जल्दी से चढ़ जाओ, आपकी जान बच जाएगी। पुजारी तब फिर से बोला तुम लोग चले जाओ भगवान मेरे साथ है मुझे कुछ नहीं होगा, भगवान मुझे बचा लेंगे। तब हेलीकाप्टर भी चला गया। देखते ही देखते पानी छद के ऊपर चढ़ गया और पुजारी पानी में तैरने लगा। और जोर जोर से चिल्लाने लगा "प्रभु मुझे बचाओ" "प्रभु मुझे बचाओ" "प्रभु मुझे बचाओ"। लेकिन भगवान उसको बचने नहीं आया और वो पानी में डूबकर मर गया।

मरने के बाद जब स्वर्ग पर चला गया तब भगवान के पास पंहुचा। और भगवान से झगरा करने लगा, "में आपका इतना बरा भक्त हु, कभी झूठ नहीं बोला, हमेशा आपकी सेवा करता रहा, हमेशा आपके ऊपर बिश्वास करता रहा, लेकिन आपने मुझे नहीं बचाया। तब भगवान मुस्कुरायह और बोले "नहीं मैंने तुम्हे बचाने की बहुत कौशिश की लेकिन तुम नहीं माने"। पुजारी और भी ज्यादा गुस्से में बोलने लगा "क्या में अँधा था आपको नहीं देख सका, कहा आया थे आप? भगवान होकोर झूठ मत बोलो"। भगवान तब फिर से मुस्कुराए और फिर बोले "याद करो उन गाँव वालो को जो तुम्हे बाड़ से पहले लेने आया थे, उनको मैंने ही भेजा था। फिर जो लोग नाव लेकर आया थे उनको भी मैंने ही भेजा था। फिर अंत में हेलीकाप्टर में जो आदमी तुम्हे बुला रहा था वो में स्वयं था। लेकिन तुम मुझे पहचान नहीं पाए। भगवान बोलते रहे "जरुरी नहीं की में सिर्फ चक्र, गधा, त्रिशूल, कमल के साथ ही आऊ, में किसी भी रूप में आ सकता हु। तुम्हारे पास इतनी भी बुद्धि नहीं थी मुझे पहचानने की।

पुजारी को अपने भूल का अहसास हुआ और भगवान से माफ़ी मांगने लगा।

दोस्तों इंसान भी कुछ इस पुजारी की तरह ही होते है। भगवान के ऊपर भरोसा इतना ज्यादा करते है की खुद कुछ नहीं करते। जीवन में भगवान इतने सारे अवसर देते है की बुद्धि की कमी की वजह से उन अवसरो को देख नहीं पाते। आपके जीवन में भी अगर अवसर आ रहा है तो उसे एक बार जरुर परखे। क्या पता वह आपका सुनहरा मौका हो। जीवन में अवसरों की कमी नहीं होती है। लेकिन लोग उसे देख कर भी अनदेखा कर देते है। आप कभी ऐसी गलती नहीं करना। भगवान के ऊपर बिश्वास करना अच्छी बात है। लेकिन मुर्खता अच्छी बात नहीं है। किसीने सच ही कहा है की **"कभी भगवान के भरोसे नहीं रहनी चाहिए क्या पता भगवान आपके भरोसे हो?"**। इस बात को ध्यान में रखिये।

हमारे चारो तरफ बहुत सारे अवसर होते है बस उसे पहचानने की जरुरत होती है। अबसरो को पहचानिए और काम पर लग जाइए आप भी सफल बनेंगे। आप भी अमीर बनेंगे। आप भी कामयाब बनेंगे। धन- दौलत सुख-समृद्धि और संपत्ति आपके पास ज़रूर होगी।

"खुदकी सहायता करना ही
सबसे बड़ी सहायता होती है"

अबसर खुद निकालिए

रजत एक पढ़ा-लिखा गरीब लड़का था। H S की परीक्षा पास करने के बाद पैसो की कमी की वजह से आगे पढ़ नहीं पाया और अपने परिवार की मदत करने के लिए नौकरी की तलाश करने लगा। ज्यादा पड़े लिखे नहीं होने के कारण उसे नौकरी भी नहीं मिलती थी। एक दिन उसे एक कंपनी से बुलावा आया interview के लिए। interview में जो-जो सवाल पूछा गया वो सब उसने अच्छी तरह से बोला। अंत में उसे चुना गया और एक फॉर्म भरने के लिए बोला गया। उसमे एक जगह email लिखने के लिए बोला गया। लेकिन रजत के पास कोई ईमेल नहीं था क्युकी गरीब होने के कारण वो कंप्यूटर नहीं सिख पाया था।

रजत को वो नौकरी भी नहीं मिली क्युकी उसके पास email नहीं था। रजत थका-हारा निराश होकर घर आया और देखा उसके पिताजी बीमार थे। कल से कमाने वाला भी कोई नहीं था। घर कैसे चलेगा? उसके पॉकेट में सिर्फ 100 रूपया था। बैठते बैठते सोचने लगा और अचानक वो उठा और बाजार में चला गया। 100 रुपयह से बाजार से कुछ टमाटर ख़रीदा और उसको बेचने के लिए घर घर जाने लगा। एक घंटे में सब कुछ बिक गया और उसे 50 रुपयह का मुनाफा हुआ। उसको समझ आया की इसमें मुनाफा है। और वो फिर से 150 रुपयह का टमाटर लाया और कुछ और घरो में बेच दिया। ऐसा वो दिन में 5 बार किया। शाम को उसने हिसाब लगाया तो उसको 300 रूपया मुनाफा हुआ। उसने अपने घर के लिए 100 रूपयह का राशन लिया और बाकि के रुपयह दुसरे दिन ब्यापार करने के लिए रख दिए। वो हर दिन ऐसा करने लगा और देखते ही देखते वो बहुत बड़ा सब्जी ब्यापारी बनने लगा। अब उसके लिए 15 सेल्समैन हर दिन सब्जी बेचने के लिए जाते है।

एक दिन रजत ने सोचा की उसको एक इन्सुरेंस पालिसी करना चाहिए। और उसने एक इन्सुरेंस एजेंट को बुलाया और वो फॉर्म भरने लगा। इन्सुरेंस एजेंट ने रजत से अपना email पूछा तब रजत ने बोला की नहीं हैं। तब इन्सुरेंस एजेंट चौक गया और बोला की इतना बड़ा ब्यापारी होकर आपके पास ईमेल नहीं है? अगर आपके पास ईमेल होता तो आप कहा से कहा से पहुंच जाते आपको पता है? रजत तब हस्ते हुए बोला हां पता है "एक कंपनी का सेल्स मेन"।

दोस्तों अवसर बहुत सारे है हमारे चारो तरफ। लेकिन कुछ लोग अपने अहंकार की वजह से बड़ा और छोटा बोलके नहीं करते। "कोई काम छोटा नहीं होता" यह अगर याद रखा जाये तो आप भी बहुत सारे पैसे कमा पाएंगे। सफल बन जायेंगे। दुनिए के जितने सारे अमीर लोग है वो भी ऐसे ही छोटे-छोटे काम करके अमीर बने है। आप टाटा को ही ले

लीजियह वो नमक बेचता है। अनिल धीरुभाई अम्बानी पहले पेट्रोल पंप पर काम करते थे। प्रधानमंत्री रारेन्द्र मोदी भी चाय बेचते थे। भुतपुर्ब राष्ट्रपति डॉ ए पि जे अब्दुल कलाम भी बचपन में पेपर बेचते थे। क्या आपको वह पता नहीं है? एसे बहुत सारे उदहारण है इस दुनिया में। काम काम होता है छोटा या बड़ा नहीं होता। यह ध्यान में रखिये और आगे बढ़ते जाइयह। आप भी सफल इंसान बन जायेंगे। आप भी अमीर बन जायेंगे। आप एकदिन कामयाब बन पाएंगे।

"बाहाना करने और बानाने से गरीबी आती है"

यह किताब पढ़के आपको कैसा लगा और इस किताब को पढ़ने के बाद आपके जीवन में क्या बदलाव आया? क्या आप सफलता के पथ पर चल रहे है? इस किताब ने आपके जीवन पर क्या असर ढाला है? इन सब के बारे में आप मेरे मेल पर लिखकर जरुर

बताइयहगा। इस किताब का दूसरा संकलन भी बहुत जल्द प्रकाश होने वाला है। जिस बुक में मैं आपके दिए हुए चिट्ठी को भी छाप दूंगा। ताकि आपके जीवन में जो बदलाव आया है उसके बारे में भी सबको पता चले। लोगो को प्रेरणा मिले आगे बढ़ने के लिए।

मेरा mail id है krishnakanta2010s@gmail.com

इस किताब को पढ़ने के लिए आपका कोटि कोटि धन्यबाद।

"में कोटि कोटि धन्यबाद करता हु और कोटि कोटि नमन करता हु "श्रीमद भागवत गीता" का जहा से मुझे ज्ञान का भण्डार मिला"

और धन्यबाद देता हु

Britt World Wide Education System

को जिसने मेरे बंद आखो को फिर से खोल दिया और ज्ञान के उजाले में लेके गया

"Special Thanks to"

The best Motivational Speakers

T.S Madaan, Sandeep Maheswari, Dr.Ujjwal Patni, Dr. Vivek Bindra, Sri Gour Gopal Das, BK Shivani, TD Jakes and Mohammad Shakil.

And the Best Writers

Rhonda Byrne, Dr. Joseph Murphy, Dell Carnegi, Shiv Khera, Suresh Mohan Semwal, Robert T. Kiosaki, Barke Hadges, Nepolian Hill, Og. Mendino, Brain Tracy and Surya Sinha.